हिन्दी-साहित्य-प्रचारक ग्रंथमाला, द्वितीय पुष्प।

आर्थिक-सफलता।

अनुवादक–

पण्डित शिवसहाय चतुर्वेदी

प्रकाशक–

हिन्दी-साहित्य-प्रचारक कार्यालय

नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश)।

ज्येष्ठ संवत् १९७४।

जून सन् १९१७ ई०।

समर्पण।

मेरे

बाल्यसखा, सहाध्यायी और परम आत्मीय,

पण्डित व्रजभूषणलालजी चतुर्वेदी,

वैद्यरत्नके कर-कमलोंमे

सादर समर्पित।

—शिवसहाय चतुर्वेदी।

विषय-सूची।

प्रस्तावना।

संसारमें पैसेका बड़ा महत्त्व है—उसके बिना हमारा एक भी काम नहीं
न सकता है। प्रत्येक उत्तम कार्यके लिए उसकी आवश्यकता पड़ती है।
पैसेके बिना हमारी सारी शिक्षा, कुशलता और बुद्धिमानी मिट्टीमें मिल
ती है। सब कामोंके लिए—सबसे पहले पैसा चाहिए। आर्थिक-सफलता
अन्य सब सफलताओंकी जननी है। यद्यपि संसारमें दरिद्रसे लेकर
गृहपति तक सभी श्रीवृद्धिकी अभिलाषा रखते हैं और उसके लिए
पनी बुद्धि और बलके अनुसार प्रयत्न भी करते हैं, किन्तु अधिकांश
ग उसके उचित साधनोंको न जानने तथा अपनी शक्तियोंसे अपरिचित
नेके कारण सफल मनोरथ नहीं होते। अनेक लोग अपने भाग्यको बुरा
बताकर आगे प्रयत्न करना ही छोड़ देते हैं और निरंतर निर्धनतामें
न भोगा करते हैं। जो लोग भाग्यको ही सब कुछ समझते हैं और
गीके भरोसे पड़े रहते हैं, उनको जानना चाहिए कि संसारमें भाग्य,
योग, अकस्मात आदि कोई चीज नहीं है—ये सब सृष्टिके गंभीरतम
यमोंपर जो कभी कभी हमारे समझमें नहीं आते—आधार रखते हैं।
देखते हैं कि पहाड़की चोटीसे सहसा शिलाखंड गिरकर अगणित
को चूरचूर करता हुआ नीचे आ गिरता है। क्या यह अकस्मात् है?
, शताब्दियोंसे हवा, पानी और धूप उसके नीचेके परमाणुओंको निरंतर
ते रहते हैं और एक दिन उसे नीचे गिरा देते हैं। यदि हम चाहें
उसके गिरनेकी पूर्वस्थितिको देखकर उसके रोकनेका प्रयत्न कर
ते हैं। कहनेका तात्पर्य यह है कि संसारमें संयोग या अकस्मात् कोई
नहीं है। सर्वत्र प्रकृतिका एक महान् नियम काम कर रहा है—
सारका प्रत्येक काम किसी न किसी सूक्ष्म नियमपर अवलम्बित रहता है।
हमको भला या बुरा, सुखी या दुःखी, धनी या कंगाल बनानेवाला
ल हमारा मन ही है। हमारी उन्नति या अवनति, उत्थान या पतन
रे विचारोंपर ही अवलम्बित रहती है। हम जैसा चाहें वैसा बन सकें,
हममें इतनी ताकत रहनेकी शक्ति है; [illegible]

पद है, कौन अधिकार है, कौन वस्तु है कि जिसके लिए हम [illegible]
ठहराये जा सकें ? परन्तु हम अपनी शक्तियोंको स्वतः ही नहीं जानते
और इसी लिए निर्बल और आलसी बने रहते हैं। हमारे भीतर
अनेक मानसिक शक्तियाँ छुपी रहती हैं कि जिनके अस्तित्वकी [illegible]
कुछ भी खबर नहीं होती। हम अपनी इन मानसिक शक्तियोंसे
दुनियाँकी प्रत्येक वस्तुको प्राप्त कर सकते हैं—धनवान् बन सकते हैं।।
लिए अप्राप्य या असंभव कुछ भी नहीं है।

इस पुस्तकमें इसी विषयका स्पष्ट रीतिसे विवेचन किया गया
आर्थिक-सफलताकी अभिलाषा रखनेवाले पुरुषोंको यह पुस्तक
पढ़ना चाहिए। इस पुस्तकको पढ़कर वे सबल और शक्तिसम्पन्न
जावेंगे, उनकी अनेक गुप्त शक्तियाँ प्रकट होकर उनके कर्तव्य
सुगम बना देंगी। इस पुस्तककी युक्तियाँ दरिद्रसे लेकर अमीर तक
लिए लागू हो सकती हैं—प्रत्येक व्यक्ति उनका अवलम्बन करके [illegible]
बन सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक एडवर्ड ई. विलसकी 'फाईनानशियल सक[illegible]
नामक अँगरेजी पुस्तकके श्रीयुत भीनोच्छेर मानकजी मादनकृत गु[illegible]
अनुवादपरसे लिखी गई है। हम श्रीयुत मादनजीके परम कृतज्ञ [illegible]
जिनकी कृपासे हम इस पुस्तकको पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत [illegible]
समर्थ हुए हैं।

यहाँपर यह निवेदन कर देना भी आवश्यक है कि यह उक्त गु[illegible]
पुस्तकका शब्दशः अनुवाद नहीं—भावानुवाद है। आवश्यकतानुसार
तथा परिवर्तन भी किया गया है। ऐसा करनेपर भी मूल पुस्तकके [illegible]
और भावोंको कायम रखनेके लिए पूरा पूरा ध्यान रखा गया है।
नासमझी या प्रमादसे कुछ भूलें रह गई हों, तो हम उनके लिए [illegible]
क्षमा-प्रार्थी हैं।

देवरी (सागर)
पूर्णमासी सं. १९७३

शिवसहाय चतुर्वेदी

आर्थिक-सफलता।

पहला प्रकरण।

पैसेका महत्त्व।

" *The man who has money has always the power — the divine power a man can possess of making those about him happy.* "

" John Halifax, Gentleman."

—" जिस मनुष्यके पास पैसा है उसीके पास शक्ति है—ऐसा वह ईश्वरीय [illegible] है कि जिससे वह अपने आसपासवालों को सुखी कर सकता है।"

*   *   *

अनेक अयुक्त विचारोंमेंसे पैसासम्बन्धी विचार भी बहुत भ्रम और नासमझी उत्पन्न करनेवाले हैं। कई लोग पैसाको ही सर्वस्व समझते हैं और उसकी प्राप्तिके लिए अपनी बुद्धिमानीकी हद तक दौड़ धूप करते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो पैसेको सर्वथा तुच्छ समझते हैं और इस [illegible]

नेकी पैसा पैदा करनेकी असाधारण चतुराईको धिक्कारते हैं। दोनों पक्ष झूठे हैं, क्योंकि ये दो पृथक् पृथक् और आमने-सामनेके ध्रुवोंकी ओर खड़े हैं; सचाई तो मध्य मार्गपरसे ही मिल सकती है।

यदि कोई मनुष्य अपना शरीर पैसा पैदा करनेके लिए ही बना हुआ समझकर उसकी देवताके समान पूजा करे, तो वह बड़ा मूर्ख है; कारण कि वह असत्यको सत्य मान बैठा है। इसी तरह जो मनुष्य पैसेको खाना-खराबी—सत्यानाशीकी जड़ समझकर उसे शैतानकी उपमा देता है, वह भी पहलेही के समान मूर्ख है। बुद्धिमान् पुरुष तो वही है जो पैसेको जरूरतकी पूर्तिका एक साधनमात्र समझकर सत्य और झूठके बीचका अंतर समझता है। ऐसा पुरुष न तो पैसेको देवता ही समझता है और न उसे शैतानकी उपमा देता है, वरन वह उसे बाह्य जगतकी जरूरतोंको पूरा करनेवाला एक साधनमात्र समझता है और उसे उतना ही मान देता है वास्तवमें वह जितनेके योग्य है। हाँ, लालच बेशक बुरी चीज है, परंतु उचित आकांक्षारहित व्यक्ति इस जीवनकी बहुतसी मधुरताओंसे वंचित रहता है। बुद्धिमान् पुरुष जिस तरह पैसा पैदा करनेके लिए आतुर रहते है, उसी तरह वे उससे अच्छी चीजें खरीदनेमें भी आनाकानी नहीं करते हैं। जीवनके सुख और स्वास्थ्य-साधनके लिए पैसेकी बहुत आवश्यकता है। प्रत्येक मिलनेवाले अवसरका द्वार पैसेसे ही खुलता है—पैसेके बिना कभी कुछ नहीं होता।

मनुष्यको भरी हुई थैली खोलनेसे उत्साह और खालीसे दुःख होता है। पैसा एक हथियार है, जिससे अनेक सुन्दर चीजें

जा सकती हैं और जिसके बिना प्रत्येक आदमी लाचार रहता है। अपनी अगणित इच्छाओं और उम्मेदोंका संयुक्त गोशवारा पैसा ही है। एक समय ऐसा था कि जब पैसा नहीं था, और शायद एक समय ऐसा भी आवे जब पैसेकी जरूरत न रहे–पर आज बीसवीं शताब्दिमें अपने जीवन और सुखके लिए पैसेकी बड़ी आवश्यकता है–इसकी अपेक्षा अधिक जरूरतकी चीज दुनियामें और दूसरी नहीं है।

इस विषयमें यह बात जान लेना चाहिए कि जब हम कहते हैं, कि मनुष्यको पैसेकी गरज है, तब हम उसका यह अर्थ करते हैं, कि जब पैसेसे ही सारी उत्तम वस्तुयें खरीदी जा सकती तब वही हम मनुष्योंको गरज है–जरूरत है। जिस पैसेके बिना कोई भी वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती–जिसके बिना हमारी समस्त सुविधायें पंगु रहती हैं, उस पैसेको जो मनुष्य धिक्कारते हैं वे मानो अपने जीवनकी समस्त सद्इच्छाओंका खून करते हैं। एक लेखक उदारतापूर्वक लिखता है कि "मनुष्य जबतक पैसेके महत्त्वको नहीं समझता है तबतक वह पद पदपर ठोकरें खाता है, खाने पीनेकी फिक्रमें लगा रहता है, पहिरने ओढ़नेके कपड़ोंके लिए तरसता है, कहनेका सारांश यह कि उसे अपने जीवनके समस्त सुखोंसे विमुख रहना पड़ता है–उसकी सारी सुविधायें मनकी मनमें ही मर जाती है।"

पैसा पैदा करनेकी लगनको वे ही लोग पैदा करते हैं जो पैसा पैदा करनेके क्षेत्रमें निष्णात होते हैं या जो बिना परिश्रम किये ही किसी सम्पत्तिके उत्तराधिकारी (वारिस) बन बैठते हैं।

को रचते है और वह केवल अपनी चालचलनपर ही नहीं, व
अपने आसपासवालोंपर भी गुप्त प्रभाव डालता है। हम
समय अपने अभीष्ट विचारोंको अन्य ओरसे अपनी ओर खींचते
इसलिए हमको चाहिए कि हम अपनी चालचलन (चरित्र)
मकानको उचित खोज और अच्छे हथियारोंसे सुन्दर तथा
बनावें।

इस प्रकरणका मूल उद्देश्य अपने मनकी सबल आदतों या म
सिक झुकावके द्वारा प्रामाणिकपनसे पैसा पैदा करनेकी युक्ति
बतलाना है। इस स्थलपर मनकी सबल और निर्बल आदतों
विषयमें कुछ विवेचन करनेकी आवश्यकता है। हम सबल आदत
अर्थ–विश्वासयुक्त आतुरता, आत्मविश्वास, साहस, बल और नियम
पर भरोसा–करते हैं, और निर्बल आदतका अर्थ निर्बलता, आत्म
आत्मविश्वास तथा साहसकी कमी और नियमोंपर अविश्वास
करते हैं।

अनेक व्यक्ति इस उच्च मानवीशक्ति तथा बलके अभावसे सदै
दुःखी रहा करते हैं। अपने साथियोंको इस शक्तिके बलसे सफ
मनोरथ होते देखकर वे चाहते है कि हमको भी यह शक्ति मिले।
यहाँतक उनका ख्याल दुरुस्त है–पर इससे आगे वे नहीं बढ़ते
हैं। वे समझते हैं कि वह शक्ति हमको किसी तरह प्राप्त नहीं हो
सकती है–हमारा भाग्य ही खोटा है। इसका परिणाम यह होता
है कि ये पश्चात्तापकी हद तक निष्फल जाते है। मालूम पड़ता है
कि वे यह समझते हैं कि हमारा मन किसी ऐसी जड़ वस्तुसे बना
जो सुधारा या सँभाला नहीं जा सकता है। बस, उनके ये
र ही उनकी अवनतिके कारण हैं।

कबीर कहते हैं—

" मन माता मन दूबरा, मन पानी मन लाय।
मनको जैसी ऊपजे, मन तैसा हो जाय॥
मन मरकट मन चातुरी, मन राजा मन रंक।
जो मन हरिजीको भजे, हरिजी मिले निशंक॥
मनके हारे हार हैं, मनके जीते जीत।
परब्रह्म जो पाइये, मनकी हो परतीत॥"

आजकलके सायंस जाननेवाले विद्वानोंने सिद्ध किया है कि सावधानी, सँभाल और अभ्याससे मनकी शक्ति और आदतको बदल सकते हैं। मनुष्य चाहे तो अपने चालचलनरूपी बगीचेसे मनचाहे और कटीले झाड़ोंको उखाड़कर, उनके बदले सुन्दर फल-फूलोंवाले वृक्ष लगा सकता है और इस प्रकार अपने उक्त बगीचेको हराभरा और सुशोभित बना सकता है। अपना मस्तिष्क क्या है! वह केवल मनका एक हथियार है। यह मस्तिष्क करोड़ों छोटे छोटे कोषों (छिद्रों) से बना हुआ है—जिसका अधिकांश भाग बेकाम पड़ा रहता है। जब एक कोष (cell) अपने झुकावको बदलता है, तब उस जगहके बेकाम पड़े हुए कोष तुरन्त अपने काममें लग जाते हैं। इतना ही नहीं, वरन वे कोष इस नये कामको करते समय अपनी वास्तविक खासियतको प्रकट करके मानों एक नया मस्तिष्क (new brain) बनाते हैं। और इससे अपनी इच्छाओंको उत्तेजना मिलती है और हम उनको सफल करनेमें समर्थ बनते हैं।

चालचलनको बनाने—चरित्रसंगठित करनेकी आधुनिक वैज्ञानिक विधि कोई गप या अफवाह नहीं है, प्रत्युत वह एक परम

गत और हजारों प्रमाणोंसे सिद्ध हुई बात है। यूरोप और अमेरिकाकी आत्मविद्याके तत्त्वोंकी शोध करनेवाली प्रयोगशालाओंमें इस विषयकी अगणित परीक्षायें हो चुकी हैं और होती जाती हैं। इन परीक्षाओंसे उक्त देशके प्रसिद्ध विद्वानोंने असीम लाभ उठाया है—वे एक बहुत बड़े प्रमाणमें सफलता प्राप्त कर रहे हैं और इस विषयकी सत्यताका यही सूर्यवत् देदीप्यमान प्रमाण है। अपने मनके विचारों और मानसिक झुकावोंके अनुसार ही मस्तिष्कके सूक्ष्म कोष निरंतर काम किया करते हैं और तदनुरूप ही उनका गठन होता है। जो मनुष्य इस बातको अच्छी तरह समझ लेते हैं उन्हें निःसंदेह सफलता प्राप्त होती है।

अब हम इस विषयकी खोज करते हैं कि मनुष्योंका मानसिक झुकाव दूसरोंपर क्यों, कैसे और कितना प्रभाव डालता है। यदि तुम बारीकीसे विचार करके देखोगे तो तुम्हें विदित होगा कि अपनी चालचलन या आचरणोंकी छाया हर समय अपने आसपास वालोंपर पड़ती है। अतएव तुम सोच सकते हो कि हमारे मनकी निर्बल आदतें,—जैसे कमजोरी, साहसहीनता, आलस्य, निठल्लापन और अपने आपपर अविश्वास आदि अपने आसपासवालोंपर कैसा बुरा प्रभाव डालती होंगी!

अपने काम और व्यापारपर अविश्वास या संदेह रखनेवाला आदमी तुम्हारे साथ काम करता हो, तो स्वाभाविक रीतिसे तुम भी उसपर विश्वास—भरोसा नहीं कर सकते हो। यदि उस समय उस व्यक्तिका मन विश्वास, सफलता और बलपूर्ण विचारोंसे युक्त हो तो स्वाभाविक रीतिसे उसका प्रभाव तुमपर पड़े बिना न रहेगा

और तुम्हारे मनमें भी सफलताके विचार दौड़ने लगेंगे। यदि तुम किसी ऐसे स्थानको जाओ जो शोक या दुःखसे व्याप्त हो, तो वहाँ जाकर तुम भी उसी तरह गंभीर और शोकयुक्त बन जाओगे। कई लोग निष्फलता, साहसहीनता और 'हम नहीं कर सकते' की रोनी सूरत लिए फिरा करते हैं। क्या ऐसे लोगोंका असर तुमपर नहीं पड़ता? अवश्य पड़ता है। इसी तरह साहसी निश्चिन्त और कर्मशील पुरुषोंकी संगतिमें लोगोंमें नया जीवन, नया उत्साह और नया बल आता है। एक रोनी सूरतके आदमीको तुम अपने सामने खड़ा करो और फिर देखो कि तुम्हारे मनमें कैसे भाव उठते हैं—तुमपर उसका कैसा प्रभाव पड़ता है? प्रत्येक आदमी एक तरहकी *हवासे घिरा रहता है। यह हवा अपने विचार और मानसिक झुकावके अनुरूप हुआ करती है। अमेरिकाके एक प्रसिद्ध विद्वान् एमरसन साहब कहते हैं कि—"जब एक स्वस्थ-चित्त और निर्मल हृदय पुरुष अपने मनमें किसी भले विषयका विचार या चिन्तवन करता है, तब वह विचार सारी दुनियाँभरको भला बनाता है।" बहुधा हम लोगोंको एक ही नजरमें पसंद या नाप-

* साधु-संतों, महापुरुषों या आचार्योंके मुखमण्डलपर जो तेज या प्रकाश दिखाई देता है, उसे हिन्दूधर्ममें 'तेजस' अरबवालोंमें '[illegible]' और ईसाई धर्ममें 'नीम्बस' 'आरीओला' 'हेलो' या 'ग्लोरी' कहते हैं। आजकलके विज्ञानवेत्ता इसे 'ओडाइल' या Nervous Ether अथवा Nervous atmosphere कहते हैं। इस विषयका पहला शोध बेरन-राइकन बेकने किया था। तत्पश्चात् [illegible] इत्यादि, कुछ और विद्वानोंने उसका अनुमोदन किया। [illegible] डाक्टर [illegible] और डा. [illegible] आदि भी उसके माननेवाले थे। अन्तमें [illegible] और [illegible] प्रो० [illegible] इस हेलो [illegible] उतारा था।

तीसरा प्रकरण ।

भय और अकर्मण्यता ।

To Fear the Foe, since Fear oppresseth strength
Gives in your weakness strength unto your Foe
And so your Follies Fight agains. yourself

Shakespeare.

—तुम अपनी कमजोरीसे शत्रुओंसे डरोगे तो तुम्हारे शत्रुओंको बल मिलेगा और तुम्हारी भूलें स्वतः तुम्हारे ही सामने लड़नेको तैयार होंगी ।

—शेक्सपियर ।

• • •

हमारे मनमें भय अधिक परिमाणमें भरा हुआ है। हमारे मनकी निर्बल आदतोंको जन्म देनेवाला और कोई नहीं—केवल एक भय ही है। अविश्वास, अकर्मण्यता, अधैर्य, ईर्षा, असंतोष, मनकी चञ्चलता तथा ऐसे सैकड़ो अवगुण भयकी संतान है। केवल एक भयको नष्ट कर देनेसे इन अवगुण आप-ही-आप नष्ट हो जाते हैं।

जड़ काट देनेसे शाखा-प्रशाखायें और फूल-पत्ते सब आप-ही-आप सूख जाते हैं।

भय और उसकी संतान हमारे अच्छे विचारों, साहसपूर्ण प्रयत्नों और आकांक्षाओंको चूर्ण चूर्ण कर डालती हैं। उसने सैकड़ों बल्कि सहस्त्रों जीवनोंको नष्ट-भ्रष्ट कर डाला है। सैकड़ों नवयुवकोंके आशायुक्त हृदयोंको अंधकारपूर्ण बना दिया है। भयके रहते साहस और आशाका अंकुर कभी अंकुरित नहीं हो सकता है। भयकी संतानोंमें सबसे श्रेष्ठ और गद्दीकी वारिस 'अकर्मण्यता' है। उसकी कृपासे हमारी कोई भी सदिच्छा—कोई भी आकांक्षा और कोई भी क्रिया सफल नहीं होने पाती है—मनके विचार मनमें ही मुरझा जाते हैं। अकर्मण्यता 'चोरी पर सिरजोरी' की कहावतको चरितार्थ करती है—वह जिस पुरुषपर अपना अधिकार जमाती है, उसके हृदयसे समस्त सद्गुणोंको निकालकर उसके बदले अपना और अपने सहचरोंका आसन जमाती है। अकर्मण्यताका प्रवेश होते ही है "मैं कर सकता हूँ" "होना ही चाहिए" इत्यादि दृढ़ विचारोंकी जगह "मै नहीं कर सकता" "मेरा साहस नहीं होता" "यह न हो सकेगा" "जैसा भाग्यमें लिखा होगा" "किन्तु" "परंतु" आदि संदेहजनक वाक्य मुँहसे निकलने लगते हैं; इतना ही नहीं, वह मनुष्यको अयोग्य और मनको सुस्त बना देती है—वृद्धि और सुधारके मार्गमें खंदक खोद देती है।

भय और अकर्मण्यताका सबसे बड़ा अत्याचार यह है कि वे अपनी शक्तिसे लोगोंको खेदकी अन्तिम सीमा तक पहुँचा देती हैं। भय और अकर्मण्यताके रहते कभी किसीने विजय या सफलता नहीं

पाई है। इन कट्टर शत्रुओंके कारण हम अपनी सफलताके मार्गमें एक अँगुल भी आगे नहीं बढ़ सकते हैं, क्योंकि उनकी उपस्थिति ही अवनति-सूचक है।

हम लोग आजकी चिन्तासे जितने दुखी नहीं होते—जितने भविष्यकी चिन्तासे हुआ करते हैं। भविष्यकी चिन्ता ही हमको असमयमें मार डालती है। आजकी चिन्ताका बोझा उठानेके लिए हम सब तरह समर्थ हैं, परन्तु हम लोगोंने अपनी अज्ञानतासे कल और परसोंकी चिन्ताकी रस्सी भी अपने गलेमें लटका रक्खी है। आगामी कालकी चिन्तामें हम जो शक्ति नष्ट करते हैं, वही शक्ति आजकी चिन्ताका बोझा उठानेके लिए यथेष्ट है, परन्तु हम इस बहुमूल्य नियमसे अनभिज्ञ हैं। प्रकृति इतनी दयालु है कि उसने हमको आजके कामोंके करनेकी शक्ति देनेके सिवा भविष्यमें आनेवाली कठिनाइयोंके झेलनेकी शक्ति भी दे रक्खी है; परन्तु हम अपनी अज्ञानताके कारण उस शक्तिके समूहको आगामी सप्ताहकी चिन्ताओंमें खर्च कर डालते हैं। बहुधा देखा जाता है कि जिन चिन्ताओंके कारण हम महीनों पहलेसे परेशान रहते हैं, कभी कभी समय आनेपर वे आती ही नहीं हैं—आप ही आप टल जाती हैं। इन आगामी चिन्ताओंमें ही हम अपनी अधिकांश शक्ति खो बैठते हैं, और जब काम करनेका असली अवसर आता है तब हम लाचार होकर बैठ रहते हैं—कार्यक्षेत्रमें पैर रखते ही निर्बलता आ दबाती है!

प्रिय पाठको! तुम अपने जीवनमें यदि एक बार भी भय और अकर्मण्यताको मार भगानेमें समर्थ हो सकोगे तो तुम अपने जीवनको एक नये ही रूपमें देखोगे। तभी तुम जीवनका मूल्य सम-

झोगे, तभी तुम समयका आदर करना सीखोगे, तभी तुम जीवनकी सच्ची प्रसन्नताका अनुभव करोगे और सुखी जीवनके रूपको समझोगे।

मनुष्य परिश्रमसे नहीं बल्कि अकर्मण्यतासे मरता है। भय और अकर्मण्यताको दूर करके ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। जबतक ये दोनों प्रबल शत्रु मनुष्यका पीछा नहीं छोड़ते, तबतक किसी तरहकी आशा रखना वृथा है। एक बार तुम अपने हृदयसे भयको निकाल डालो, फिर तुम देखोगे कि भयके साथ-ही-साथ अनेक कठिनाइयाँ भी भाग गई हैं, और तुम्हारी शक्ति भी आश्चर्य-जनक सीमातक बढ़ गई है। ऐसी स्थितिमें आज जिस विषयका तुम विचार करोगे वह समयपर संकल्पके रूपमें, साधनाके रूपमें और अंतमें सफलताके रूपमें तुम्हारे सामने आकर खड़ा हो जावेगा। इसी तरह भय और अकर्मण्यताके विचार लोगोंके हृदयमें निरन्तर निष्फलता, हानि और असम्पूर्णताके चित्र खड़े किया करते हैं कि जिनसे उनकी शक्ति और रहा सहा साहस भी नष्ट हो जाता है।

उक्त कथनसे विचारशील पाठक समझ गये होंगे कि जबतक हम भयको—जड़-मूलसे उखाड़कर न फेंक देंगे तबतक उसकी दुष्ट संतान हमारा पीछा न छोड़ेगी और हमारे आसपास ऐसी अग्नि प्रज्वलित करेगी कि हम पतंगके समान उसके आसपास चक्कर कर अपने अमूल्य जीवनको खो बैठेंगे।

"जो तुम कभी एक भी हताश या खेदजनक शब्द न बोलोगे तो मानों लड़ाईमें तुम्हें आधी विजय मिल ही चुकी।"—चाइल्ड।

यहाँपर यह प्रश्न हो सकता है कि हम भयको किस तरह भगा सकते हैं? इसका उत्तर बहुत सहज है। भय बहुत सुगमतासे भगाया जा सकता है। उपाय यह है—मानलो किसी कोठरीमें

ूब अँधेरा फैला हुआ है। इसे दूर करनेके लिए तुम क्या करोगे? या तलवार और बंदूक लेकर उससे लड़ने जाओगे? नहीं, तुम ोठरीकी सब खिड़कियाँ और दरवाजे खोलकर उसके अंदर प्रकाश ोगे, अँधेरा आप ही भाग जायगा—इसीतरह तुम भी भयरूपी अंधकारको हटानेके लिए अपने मनकी खिड़कियोंको खोल दो और उनके द्वारा धीरज दृढ़ता और साहसका निर्मल प्रकाश आने दो। साहसरूपी प्रकाशके आते ही भयरूपी अंधकारके नष्ट होनेमें विलम्ब न लगेगा। जब कभी तुम्हारे मनमें एक भी चिन्तायुक्त विचार प्रवेश करने लगे तो तुम तुरत ही साहसपूर्ण विचारोंमें लग जाओ—पुरुषोचित साहससे कहो कि "मैं निर्भय हूँ, साहसी हूँ और किसीसे नहीं डरता हूँ।" शायद तुम सायंसके इस नियमको जानते होगे कि एक समय एक स्थानपर दो वस्तुएँ नहीं ठहर सकतीं हैं। जब तुम साहसपूर्ण विचारोंसे अपने मनको भर दोगे तो फिर उस समय तुम्हारे मनमें भय कैसे टिक सकता है? साहसरूपी प्रकाशसे भयरूपी अंधकार कोसों दूर भाग जाता है।

चौथा प्रकरण।

श्रद्धा और विश्वास।

"The right Faith of man is not intended to give him repose, but to enable him to do his work."

--Ruskin.

विश्वासका अर्थ बहुत जटिल है। 'एकने कहा और हमने दूसरेने मान लिया' कई लोग इसी भोलेपनको विश्वास समझते हैं। परंतु ऐसा करना बड़ी भूल है। विश्वास एक गुण है कि जिसको समुचित रीतिसे व्यवहारमें लाना सीखनेसे हम प्रकृति और जीवनके अनेक प्रसंगोंको सुगम बना सकते हैं। विश्वास वह शक्ति है, जो प्रत्येक कामको सफलताके रूपमें बदल देती है। जिन्होंने इस शक्तिका सच्चा स्वरू

समझ लिया है, वे पैसासम्बन्धी सफलता और विश्वासको—एक ही वस्तुकी दो बाजू—या एक ही अंगके दो भाग मानते है।

पैसासम्बन्धी सफलता चाहनेवालोंको अपने आपपर, अपने भाई बन्धुओंपर और प्राकृतिक नियमोंपर विश्वास रखना पड़ता है। सबसे पहले आत्मविश्वासकी आवश्यकता है—उसके बिना न तो कोई वस्तु प्राप्त हो सकती है, और न किसी कामका प्रारंभ ही किया जा सकता है। जो लोग यह चाहते हों कि मुझपर अन्य लोग विश्वास करें, उन्हें पहले आत्मविश्वास करना सीखना चाहिए। क्योंकि आत्मविश्वास रखनेवाले पुरुष ही अपने आसपासवालोंपर विश्वास-वर्द्धक प्रभाव फैलाते हैं। आत्मविश्वास रखनेवालोंपर ही दुनिया विश्वास करती है।

तुम्हें उचित है कि तुम आत्मविश्वासको दृढतासे पकड़ो। आत्मविश्वास केवल अपने आसपासवालोंपर ही प्रभाव नहीं डालता, किंतु वह अपनी प्रकृति और मानसिक झुकावमें भी बहुत हेरफेर कर देता है। मनकी निर्बल आदतोंके कारण हृदयमें नये विचार नहीं जमने पाते हैं, और न उनका विकास ही होने पाता है। जो पुरुष अपनी इच्छा, अपनी शक्ति, अपनी बुद्धि और अपनी सफलता-पर विश्वास रखता है, उसका मनरूपी बाग सदैव इच्छारूपी फलोंसे सुशोभित रहता है और उसमें नित्य नये नये आशा-कुसुम खिला करते हैं।

हम पहले लिख चुके हैं कि तुम्हारे मनकी प्रकृति और झुकावके अनुसार नये नये विचार और नई नई वस्तुयें तुम्हारी ओर आकर्षित हुआ करती हैं। यदि तुम उक्त नियमानुसार आत्मविश्वास रखते

होगे तो तुम्हारी इच्छायें–तुम्हारी मुरादें, कितनी जल्दी और कितनी आसानीसे पूर्ण हो जावेंगी— इसका अनुमान तुम स्वतः कर सकते हो।

अमेरिकाके एक व्यवसायीका कथन है कि "विश्वास व्यापारकी जड़ है।" उसका यह कथन अक्षरशः सत्य है। क्योंकि यदि हम अपने भाई बन्धुओं और अन्य परिचित लोगोंपर विश्वास न रक्खें, तो व्यापार चल ही नहीं सकता–व्यापारका सारा कारबार विश्वासपर ही चलता है। एक व्यापारी दूसरे व्यापारीको हजारों रुपयोंका माल केवल विश्वासपर ही देता है। उसे भरोसा रहता है कि यह व्यापारी हमारे रुपयोंकी भरपाई कर देगा–इसीका नाम विश्वास है। इसी विश्वासपर तुम्हारे धोबी, नाई, दरजी आदि नौकर भी काम किया करते है और महीना पूरा होनेपर वेतन लिया करते हैं। तनिक ध्यानसे देखो तो तुम्हें माळूम होगा कि संसारके सारे काम विश्वासपर ही चल रहे हैं–यही नियम सारे संसारमें काम कर रहा है। किसी दूसरेके साथ मिलकर काम करनेके पहले उसपर भरोसा होना चाहिए। हम एक साधारण प्रश्न करते हैं–तुम्हारा नाई एक तेज हथियार लेकर तुम्हारे सामने आता है, तुम किस साहससे अपना बहुमूल्य गला उसके हाथमें सौंप देते हो? उत्तर मिलता है केवल एक विश्वास पर।

प्रत्येकपर अविश्वास रखना बहुत बुरा है। अमुक व्यक्ति मेरा शत्रु है, अमुक मेरी बुराई चाहता है, अमुक मेरा अशुभचिन्तक है, इत्यादि विचार रखना मूर्खता है। अपने भाई-बंधु और परिचित स्वजनोंकी भलाई और शुभेच्छाका ध्यान रखकर निष्पक्ष होकर काम करो, कभी तुम्हारा कोई शत्रु न होगा

से सभी आदमी अपने मित्र और विश्वस्त मालूम पड़ने लगेंगे। क कविका कथन है कि "तुम मित्रताके वृक्षको लगाओ जिससे म्हारी आकांक्षायें पूर्ण हों और शत्रुताके वृक्षको उखाड़कर फेंक ।, जिसमें अगणित दुखदाई फल फलते है।"

इसके उपरान्त, प्राकृतिक नियमोंपर विश्वास रखनेकी आव- यकता है। इस समय अनेक पाठक इसके लाभालाभसे अपरिचित ोंगे, अतएव इस स्थलपर इसका कुछ विवेचन करना आवश्यक तीत होता है।

शायद तुमको यह जानकर आश्चर्य हुए बिना न रहेगा कि सफलता पानेवाले बड़े बड़े व्यापारी और धंधेवालोंको एक अज्ञान क्ति छुपी रीतिसे सहायता किया करती है। यह कौन शक्ति है, उसे े स्वतः नहीं जानते हैं। कोई उसे भाग्य कहता है, कोई तकदीर हता है और कोई विधाताका लिखा कहता। जो हो, पर इतना अवश्य है कि वे बड़ीसे बड़ी कठिनाई आपड़ने पर भी भरोसा रखते हैं और उसे लाँघकर सफलताके क्षेत्रमें जा पहुँचते है। किसी एक अच्छे व्यापारीके कामको खूब बारीकीसे देखो तो मालूम होगा कि उसे बाहरसे—प्रत्यक्ष रीतिसे कोई मदद न मिलनेपर भी वह दृढ़ताके साथ काम करता जावेगा। ... ैसे ही उसे सफलताकी ... सी अच्छे ... न रहेगा। दैव कहते ...ार-धंदेके ...े परिम-

होता है। विश्वास सफलताको पहुँचानेवाला सीधा मार्ग है।

इसनेकी क्या आवश्यकता है ? जब तुम ट्राम, मोटरकार या ताँगेपर बैठते हो तब निश्चिन्त होकर समाचारपत्र पढ़ने लगते हो या और कोई बातचीत करने लगते हो और ड्राइवर या गाड़ीवान् तुमको निश्चित स्थानपर पहुँचा देता है। उसके कार्यपर तुम्हें कभी अविश्वास नहीं होता है। ऐसा ही भरोसा तुम्हें अपने दैनिक जीवनपर रखना चाहिए। ड्राइवर या गाड़ीवान् इस सड़कसे उस सड़कपर गाड़ीको घुमाता हुआ ले जाता है, पर उसके कार्यपर तुम्हें कभी संदेह नहीं होता है। ऐसा ही दृढ़ विश्वास नियमोंके पृथक् पृथक् मार्गोंपर होना चाहिए। क्या तुम यह समझते हो कि दुनियाके सारे काम-धाम, व्यापार-धंदे केवल 'अकस्मात्' 'अवसर' या 'किस्मत' पर ही चल रहे हैं ? नहीं, अकस्मात या अवसर कोई वस्तु नहीं है, संसारके छोटे बड़े सभी काम नियमानुसार हुआ करते हैं।

तुम जिस प्रकार सायन्स, रसायनशास्त्र, गणित या खगोलशास्त्रके नियमोंपर विश्वास रखते हो और उनके अनुसार चलते हो, उसी तरह अपने रोजगार-धंदेके नियमोंपर भरोसा क्यों नहीं रखते ! तुम्हारी पैसासंबंधी सफलताका मुख्य आधार विश्वास ही है।

" —जो वस्तु नहीं है उसे हम अपने विश्वाससे पैदा कर सकते हैं। " —टेनिसन।

पाँचवाँ प्रकरण।

मनुष्यकी छुपी हुई शक्तियाँ।

There is an inmost Centre in us all,
Where truth abides in Fullness, and around,
Wall upon wall' the gross flesh hems it in,
This perfect clear perfection which is truth

मारे शरीरके भीतर एक ऐसा आभ्यन्तरिक केन्द्र है, जिसमें सत्यता पूर्णरूपसे भरी हुई है। परंतु वह संपूर्णता—जो सत्य है—इस जड़ देहरूपी कोटसे घिरी हुई है।

एक अँगरेज लेखक कहता है"—मनुष्यके भीतर कई शक्तियाँ छुपी रहती हैं। यदि उनके किंचित् प्रकाशसे भी मनुष्य शक्तिवान् हो तो उसका सांसारिक जीवन बहुमूल्य बन जाय—उसमें एक नई

जीवनीशक्तिका संचार होने लगे।" यदि कोई मनुष्य यह स
हो कि मैं नियमोंके दृढ़ बंधनसे जकड़ा हुआ हूँ और अप
एक प्रकट शक्तियोंको विकासित करनेके सिवा अधिक कुछ नहीं
सकता हूँ, तो समझना चाहिए कि वह अपनी योग्यता और शक्ति
बहुत कम तौल करता है। हम लोगोंमें से बहुत कम व्यक्ति गु
शक्तियोंको जानते या जाननेके लिए प्रयत्न करते हैं। जनता
अधिकांश भाग अपने जीवनको घोर अंधकार, विषम नैराश्य
शक्तिहीनतामें नष्ट करता है। खेद है कि उनको इस बातकी कु
भी खबर नहीं रहती है कि हमारे भीतर कैसी कैसी गुप्त शक्तियाँ छि
पड़ी हैं। यदि ये उन शक्तियोंको जागृत करें तो उनका जीव
उच्च, उत्तम और अनुकरणीय बन जाय।

पृथक् पृथक् कामोंमें सफलता प्राप्त करनेवाले श्रेष्ठ पुरुष हम
बतलाते हैं कि उनको अपने जीवनकालमें बड़ी बड़ी जोग
और कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा था, नये और अनभ्य
कामोंको करना पड़ा था, कई विघ्नोंको लाँघना पड़ा था, प
वे आश्चर्यपूर्वक देखते थे कि उन सबको तय करते समय उ
पास कोई नई शक्ति, नई युक्ति या नया उत्साह आजाता था।
समय यदि वे और लोगोंके समान—कायरोंके समान यह कहते
यह काम हमसे न हो सकेगा तो वे सफलताकी प्रथम सीढ़ीपर
पैर न रख पाते। वह समय निराश या मनोत्साह होनेका नहीं, प्र
दृढ़तापूर्वक पैर जमाये रहने और सफलताकी ओर लक्ष्य र
रखनेका है। जो लोग ऐसे अवसरपर पीछा पैर नहीं देते,
आश्चर्यपूर्वक देखते हैं कि उस कठिनाईको भेदन करनेवाली
नई शक्ति, एक नया उत्साह उनके सामने हाथ जोड़े हुए खड़ा

इस तरह प्रत्येक मनुष्य थोड़ा साहस और धैर्य रखकर कठिनाइयोंसे छुटकारा पासकता है। जिन लोगोंको कठिनाइयोंसे सामना करनेका अभ्यास नहीं है उन लोगोंको यह काम भले ही कठिन और दुर्लभ प्रतीत हो, परंतु जो लोग काम करनेवाले है उनको यह काम बहुत सुलभ और परिचितसा जान पड़ता है। ऐसे ही लोग जान सकते हैं कि मनके उलझन भरे यंत्रमें अनेक गुप्त शक्तियाँ-जबतक कुशलता और बुद्धिसे उनका अन्वेषण न किया जाय-सुप्त पड़ी रहती हैं। मनुष्यका मन एक विचित्र यंत्र है। लोग जैसा सोचते है, वह वैसा सुगम और सादा नहीं है। उसकी गंभीरतामें कई मार्ग और वस्तुयें छुपी पडी हैं। आजकलके विद्वानोंने विज्ञानबलसे उसपर प्रकाश डालकर उनका पता लगाया है। हम जिन शक्तियोंका अनुमान भी नहीं कर सकते है, उन शक्तियोंका मनमें अस्तित्व पाया जाता है। अपरिमित कुशलता और बुद्धिमत्ता मस्तिष्कमें छुपी पड़ी है। यदि उसतक एक ही नई आवाज, एक ही नई आज्ञा या एक ही नई प्रेरणा पहुँचाई जाय-अथवा उसका भाग्यचक्र एक ही बार जोरसे घुमाया जाय तो ये गुप्त शक्तियाँ जागरित होकर तुम्हारे सामने आइनेके प्रतिबिंबके समान खड़ी हो जावेंगी। परंतु इसके लिए साहस और दृढ़ताकी जरूरत है। परंतु खेद है कि दृढ़ता और साहसकी कसौटीपर बहुत ही कम लोग सुवर्णके समान सच्चे साबित होते हैं।

इस पुस्तकका मूल लेखक लिखता है कि मैं एक ऐसे धनी पुरुषको जानता हूँ कि जिसकी ३८ वर्षकी उमर केवल व्यापार-धंदेमें ही व्यतीत हुई थी, पर जिसे कभी लेखादि लिखनेका मौका नहीं आया था। एकाएक उसके भाग्यने पल्टा खाया और उसका सुप्त

ण सफलतावाँ बात एक मासिकपत्रमें लिखा करता था उसके मन एक लाख प्रतियाँ हर महीने निकला करती थीं।

उस धनी पुरुषने अपने जीवनमें पहले कभी कलम नहीं पकड़ी, उसे यह एक आकस्मिक अवसर मिला था—जिसे उसने मुझसे दृढ़तापूर्वक पकड़ा था। उसने साहस करके "मैं लिखूँगा" ऐसा दृढ़ धारण की थी। यह अनदेखी अपरिचित सामुके साथ सामना करनेके लिए खड़ा हो गया और उसने विस्मयपूर्वक देखा मुझमें अनजानी, अनदेखी और अचिन्त्य शक्ति मौजूद है।

यह दृष्टान्त केवल धैर्य और साहसका ही उपदेश नहीं देता, किन्तु एक महान् सबक सिखाता है। यह बतलाता है कि मनुष्यके अन्दर अनेक अज्ञात शक्तियाँ छुपी हुई हैं—जो अपने स्वामीके आदेशकी प्रतीक्षा कर रही हैं—जो हर समय बाहर कूदनेको तैयार हैं, और जो अवसर मिलते ही चाहे जैसे कठिन कामको बहुत ही सुगम कर डालनेके लिए प्रस्तुत हैं। इन शक्तियोंके अस्तित्वको जानना ही सफलताकी सीढ़ीपर पैर रखना है। इन शक्तियोंको न जाननेके कारण ही लोग अपनेको दुर्बल और तुच्छ समझने लगते हैं। मित्रो! जब तुम कठिनाइयोंके सामने खड़े होकर साहसपूर्वक कहोगे कि "मैं कर सकता हूँ" तब निश्चय रक्खो कि तुम्हारी अन्तःशक्तियाँ खिल उठेंगी और शक्ति और ज्ञानका प्रवाह जोरसे बहने लगेगा।

इस प्रकरणको समाप्त करनेके पहले हम यह कह देना उचित समझते हैं कि जब कोई भी कठिनाई तुम्हारे सामने खड़ी होकर भय दिखलाने लगे, तब तुम्हें उस समय दृढ़तापूर्वक उसका सामना करना चाहिए। यदि तुम उसके योग्य न होते तो वह कभी तुम्हारे

सामने ही न आती और जब आई है, तो वह सिद्ध करती है कि तुम उसके पात्र हो—उससे सामना करनेकी योग्यता रखते हो। यह विषय तुम्हारे मनोरंजनके लिए नहीं, प्रत्युत समयपर इसके अनु- काम करनेकी शिक्षा देनेके लिए लिखा गया है। यह विषय केव कपोलकल्पना या अनुमान नहीं, किन्तु सफलता प्राप्त स्त्री-पुरुषोंके अनुभवसिद्ध बातें हैं। यदि तुम उनसे पूछो तो वे उत्तर देंगे कि समय समयपर आनेवाली कठिनाइयों और अवसरोंके सामने दृढ़ तासे खड़े होनेके परिणाममें ही मुझमें नई शक्तियोंका विकास हुआ था।

फरमायश (माँग) हमेशा आशा, साहस, शक्ति और सफलता-को बुला लाती है।

छठा प्रकरण।

आकांक्षा।

" Ambition in a better sense, the motion of a resolute and potent genius to use strength for the purposes of strength, to clear the path, doth obstacles aside, force good causes forward "—Soul of Gladstone by John Morley (Vol. I. P. 218)

ग्लेडस्टनके लिए जान मारली लिखते हैं—

"उस अर्थमें आकांक्षा एक अद्भुत मस्तिष्कके आदमीकी हरकत है, जो बलको बल पहुँचाती है, मार्गसे कठिनाइयोंको दूर करती है, विघ्नोंको भगाती है और अच्छे कामोंको आगे बढ़ाती है।"

अहा! आकांक्षा कितना मधुर शब्द है! जिसकी एक आवाज़-मात्र हृदयको उत्साहित कर देती है—आशा और उमंगोंसे भर

देती है। जिसके मधुर स्पर्शसे महान् आलसी भी एक
उठकर सफलताकी ओर बढ़ने लगता है !

आकांक्षा क्या है ? वास्तवमें किसी वस्तुको प्राप्त करनेकी इ
मात्रको आकाक्षा नहीं कह सकते हैं, हम उसका अर्थ कुछ वि
करते हैं। इच्छा और आकांक्षामें बड़ा अन्तर है। इच्छायें बुरी ह
सकती हैं पर आकांक्षायें बुरी नहीं हो सकतीं। आकांक्षायें उत्क
दया, प्रेम, सत्यता और पवित्रतायुक्त होती हैं। हमारे मनमें रहने
वाली सदिच्छाओंको कर्त्तव्यपर आरूढ़ करना और उन्हें सफल
ताकी सीमा तक पहुँचाना ही आकांक्षाका ऊँचा अर्थ है।
उन्नतिके मार्गको प्रशस्त बनाती है और अलभ्य वस्तुओंको सु
कर देती है। जिस प्रकार पररहित पक्षी आकाशमें नहीं
सकता है, उसी प्रकार आकाक्षाहीन व्यक्ति भी कर्मक्षेत्रमें पैर नहीं
रख सकता है। किसी भी कामकी सफलता प्राप्त करनेके पहले
उसकी आकाक्षा हृदयमें उत्पन्न होना चाहिए।

मनुष्यके मनमें जैसी आकांक्षा होती है, उसे उसी परिमाणमें
सफलता मिलती है। मनुष्य क्यासे क्या हो सकता है, इसका अनु-
मान उसकी आकांक्षाओंपरसे किया जा सकता है। प्रबल तथा दृढ़
विचारोंके द्वारा आकाक्षा बढ़ाई जा सकती है। जो व्यक्ति वर्तमान
स्थितिपर संतोष करके हाथपर हाथ रखकर बैठा रहता है, वह
अपने जीवनकी उत्तमताको नहीं समझता है। वह आलसी और
निकम्मा है। आफ्रिकाका एक जंगली किसान पैनी लकड़ीसे जमीन
खोदता है—वह खेतीके औजारोंको नहीं जानता है। उसके बाप-
दादे जिस पुराने ढँगसे काम करते थे उसी ढँगसे वह भी करता
है। यदि उसे कभी हलके द्वारा खेत जोतते देखनेका

अवसर मिले, तो वह उसे बड़े विस्मयके साथ देखेगा। यदि उसमें कुछ भी विचारशक्ति होगी तो उन नये औजारोंको देखकर उसके मनमें कुछ जागृति होगी। वह विस्मयपूर्वक देखेगा कि हलके द्वारा कितनी जल्दी और अल्प मिहनतसे खेत जोता जाता है। यदि वह कुछ अधिक समझदार होगा तो उसके मनमें उन औजारोंकी चाह होगी और यही चाह तद्विषयक आकांक्षा उत्पन्न करेगी।

अब तुम आकांक्षाके अर्थको समझ गये होगे। उसे थोडे शब्दोंमें इस तरह भी कह सकते हैं कि दृढ इच्छासे उत्पन्न हुए बलवान् विचारोंका नाम ही आकांक्षा है। उत्साह और इच्छाके बिना आकांक्षा उत्पन्न नहीं हो सकती है। किसी वस्तुको तुम चाहे जितना चाहते होओ, पर जबतक उसके प्रति तुम्हारे मनमें कर्त्तव्यबुद्धि उत्पन्न न होगी तबतक वह आकांक्षा नहीं कहला सकती है। हमने मान लिया कि तुममें दृढ़ इच्छा है, परन्तु उसे सदैव उत्तेजित रखनेके लिए जबतक वैसा ही उत्साह न होगा तबतक आकांक्षा उदित नहीं हो सकती है। आकांक्षाके लिए दृढ़ इच्छा और अदम्य उत्साह दोनोंकी आवश्यकता है।

सफलता प्राप्त करनेवाले पुरुषोंके जीवनचरित पढनेसे ज्ञात होता है उनकी इच्छाशक्ति और उत्साह दोनों बहुत प्रबल होते हैं। रोमकी बादशाहतको उच्च स्थितिपर पहुँचानेवाले सीजर अथवा यूरोपकी नस नसको हिलानेवाले नैपोलियन, अथवा आज बीसवीं शताब्दिके बड़े बड़े व्यापारियों, और धंदेवालोंके जीवनचरितोंपर दृष्टि डालो तो तुम आश्चर्य्यके साथ देखोगे कि उन सबमें आकांक्षाका जाज्वल्यमान दीपक जलता था।

कई लोगोंको छोटी उमरसे ही भरपेट खाने और पाँव फैला कर बैठे बैठे दुनियाका तमाशा देखनेकी आदत पड़ जाती है। परन्तु यदि बारीकीसे देखा जाय तो मालूम होगा कि यह उनकी वास्तविक प्रकृति नहीं है। हमारे जीवनकी उत्तमताके लिए प्रकृतिने हमको उत्साह दिया है और उसके साथ दृढ़ इच्छा भी जोड़ दी है।

तो फिर कोई कारण नहीं है कि हम अपने जीवनको श्रेष्ठ और ऊँचा न बनावें, अपने मनमें उदित होनेवाली सदिच्छाओं और आकांक्षाओंको विकसित न करें और महत्त्वाकांक्षाको हृदयमें स्थान न दें। हम प्रत्येक अच्छी वस्तुकी प्राप्तिके लिए इच्छा और प्रयत्न कर सकते हैं। किसी भी उत्तम वस्तु या गुणको देखकर उसकी प्राप्तिके लिए इच्छा या प्रयत्न करना ईर्षा नहीं कहलाती है-वह महत्त्वाकांक्षा है। ऐसी महत्त्वाकांक्षा सदैव शुभ और प्रशंसनीय होती है। प्रत्येक व्यक्तिके लिए दुनियाँमें पसंद आने योग्य अगणित चीजें बिखरी पड़ी हैं, पर उनके लिए कौन प्रयत्न करता है? तुम नियमोंकी सीमाके भीतर रहकर उन चीजोंको चाहो और प्राप्त करो। उनकी प्राप्तिके लिए शरमाओ मत, किन्तु अपनी आकांक्षाको जागरित करके उनके लिए खूब प्रयत्न करो। तुम्हारे जीवनरूपी बागमें आकांक्षा कोई जंगली या कटीला झाड़ नहीं, किन्तु नन्दनवनका कल्पतरु है, जिसके द्वारा तुम्हारी सारी इच्छायें-मुरादें सफल हो सकती हैं।

जब हम किसी उत्तम वस्तु या गुणको किसी दूसरे व्यक्तिके पास देखते हैं, तब उसकी प्राप्तिके लिए हमारे मनमें इच्छा उत्पन्न होती है-यह अनुकरणकी आकांक्षा है। अनेक मनुष्य इस अनुकरणकी आकांक्षाको निंदनीय समझते हैं। परंतु उनकी इस समझसे हमको

सातवाँ प्रकरण।

उत्साह।

सब सिद्धियोंका मूलमंत्र उत्साह है। उत्साहके बि
कोई काम सिद्ध नहीं हो सकता। उत्साह का
करनेकी प्रेरणा करता है और आलस्य, चि
निराशा आदिको दूर भगाता है। इसी उत्साहके
कारण नेपोलियनबोनापार्ट फ्राँसका प्रबल प्रता
बादशाह बन गया था, सिकंदरने इसी उत्साहके कारण अनेक दे
जीत लिए थे, इसी अदम्य उत्साहके कारण महाराणा प्रतापसिं
और वीरवर शिवाजीने मुगल सम्राटोंसे आजन्म युद्ध करके स्वदे
और स्वतंत्रताकी रक्षा की थी। संसारके सभी महत्कार्य उत्साह ही
की प्रेरणासे होते हैं।

हम एक दृष्टान्त लिखते हैं—पानीके बर्तनके नीचे जलते हुए अंगारोंको उत्साह और बर्तनको मन समझो। जबतक उत्साह-रूपी अग्नि हमारे मनको गरमी नहीं पहुँचाती है, तबतक मनरूपी बर्तनमें पानीके सिवा और कुछ नहीं रहता है। परंतु जब उत्साह रूपी अग्नि प्रज्ज्वलित होती है तब मनरूपी बर्तनमें भाफ बनने लगती है। जिस तरह भाफसे छापाखाने, मिलें, रेलगाड़ियाँ आदि चलती हैं, उसी तरह मनकी भाफसे भी संसारके बड़े बड़े काम होते हैं। भाफसे चलनेवाले बड़े बड़े एँजिनोंको देखकर लोग विस्मित होते हैं, परंतु वह भाफ कैसे बनती है, इस विषयका विचार बहुत कम आदमी करते हैं।

हमने मनकी पानीके साथ तुलना की है, क्योंकि मन भी पानीके समान दौड़ता, बहता, डगमगाता और विचार—तरंगोंसे चञ्चल रहा करता है; और उत्साहको अंगार बतलाया है क्योंकि उसको उत्तेजित रखनेसे उसकी शक्तिसे बड़े बड़े काम सुलभ हो जाते हैं। यदि उत्साहकी अग्नि सदा प्रज्ज्वलित रक्खी जाय, तो मानसिक विचाररूपी पानी इच्छारूपी भाफमें परिवर्तित हो जाता है—जिससे बड़े बड़े काम सुलभ हो जाते हैं। अतएव मित्रो! तुम अपने मनरूपी एँजिनको उत्साहकी अग्निसे गरम करके उसमें इच्छारूपी भाफ पैदा करो—इस भाफसे तुम अपने जीवनके बड़े बड़े कार्य-यंत्रोंको सुगमतासे चला सकोगे।

जो तुम मनरूपी पानी, उत्साहरूपी अग्नि और भाफरूपी इच्छा को प्रस्तुत रक्खोगे तो तुम अपनी दुर्गम कठिनाइयोंको आशातीत सुलभ कर लोगे, और जो तुम अपने उत्साहकी अग्निको धीरे धीरे

हो प्रारंभ करो इसके पहले तुममें उसका उत्साह होना चाहिए। उसी उत्साहके प्रमाणानुसार तुम्हें सफलता मिलेगी।

तुमने क्या कभी इस विषयका विचार किया है कि एक बलवान् और निर्बल प्रजामें क्या अंतर है? हम कह सकते हैं कि केवल उत्साहका अंतर है। जिस प्रजामें उत्साह है, उसके सब लोग बलवान् होते हैं और सब तरहके रोजगार-धंदे, सामाजिक, राजनैतिक सुधार और सब तरहकी उन्नति कर सकते हैं। जिस प्रजामें उत्साह नहीं है उसके सब आदमी कमजोर और मुर्दादिलके होते हैं उनसे कुछ नहीं हो सकता है। वर्तमान जगतका इतिहास देखनेसे जाना जाता है कि छोटे छोटे मनुष्य भी अदम्य उत्साहके कारण बड़े बड़े योद्धा, सेनापति, करोड़पति और राज्याधिकारी बन जाते हैं।

उत्साह क्या करता है? यह मनके स्वभावकी रचना है, विश्वासको दृढ करता है, आकांक्षाको बल पहुँचाता है, अनेक गुप्त शक्तियोंको प्रगट करता है और अंतमें सफलताके [illegible] लाकर खड़ा कर देता है। अतएव प्रामाणिक पैसा पैदा करनेके लिए पैरके अँगूठेसे लेकर सिरकी चोटी तक उत्साहसे भर जाओ, निराशा और निष्फलताके विचारोंको त्याग दो और दृढ़ताके साथ आगे बढ़ते जाओ।

आठवाँ प्रकरण ।

इच्छा ।

The resolute will of a strong man Struggles
Nobly with his foe to a chieve great deeds
—*Longfellow.*

“एक बलवान् मनुष्यकी दृढ़ इच्छा किसी बड़े कामको करते समय उसके शत्रुओंके साथ लड़ती है ।”—लांगफेलो।

एक अँगरेज कवि कहता है— “ जिसकी इच्छा दृढ़ है—वही सुखी है । (टेनीसन) इस वाक्यका अनुमोदन सारे संसारके कवि और तत्ववेत्ता करते हैं । एक स्थलपर एक दूसरा कवि कहता है—“ अय जीती जागती इच्छा ! सब चीजें हार जावेंगीं, पर तू बनी रहेगी ।”

इच्छा, आत्मा, अहंभाव अथवा हम, मैं आदि निकट सम्बन्ध रखनेवाले शब्द एक आश्चर्यजनक शक्ति रखते है । जब आत्मा

कोई काम करना चाहती है, तब वह इच्छा द्वारा करती है। *इच्छा मानो आत्माकी पुकार या आज्ञा है। आत्मा ही वास्तवमें मनुष्य है। आत्मा कहती है—"मैं हूँ" इसमें उसके अस्तित्वका प्रमाण मिलता है। फिर वह कहती है—"मैं अमुक वस्तु चाहती हूँ।" यह विचार स्वत आत्माके अन्तर स्थानसे निकलता है, अतएव यह ईश्वरीय आज्ञा और उत्तेजनाका संदेश है। तुम इस शक्तिको जितनी विकसित करोगे और काममें लाओगे, तुम्हारी काम करनेकी योग्यता उतनी ही बढ़ेगी। निर्बल इच्छा रखनेवाला पुरुष अपने निष्फलताके विचारोंको फैलाता है, और दृढ़ इच्छा रखनेवाला अपने दृढ़ विचारोंमें प्रकृतिकी अनुकूलता प्राप्त करके सफलताका अधिकारी बनता है।

मानवी-इच्छा एक जीती-जागती शक्ति है। जैसे बिजली, भाफ, चुम्बक आदि महान् शक्तियाँ हैं, उसी तरह अपनी इच्छा भी एक महान् शक्ति है। तुम जानते हो कि इस संसारमें एक ऐसी शक्ति काम कर रही है जिसमें सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी और तारागण आदि परस्पर—एक दूसरेको खींचे हुए अनन्त कालसे आकाशमें अधर लटके हुए हैं। यह शक्ति जितनी सत्य है उतनी ही सत्य अपनी इच्छाशक्ति (will-power) भी है। छोटेसे छोटे कामसे लेकर बड़ेसे बड़े कामोंमें—सभी जगह इच्छाशक्ति अपना काम करती हुई दिखाई देती है। प्रकृतिके सारे अस्तित्वमें—चाहे सजीव हो या निर्जीव—इच्छाशक्ति ही काम करती है।

---

* मनुष्य इच्छासे बना हुआ है। इच्छाके अनुरूप रुचि, रुचिके अनुरूप कार्यके अनुरूप फल मिला करता है।

—बृहदारण्यक उपनिषद्।

ऐसा कोई काम नहीं जिसे दृढ़ इच्छा रखनेवाला पुरुष न क सकता हो। हम अपनी इच्छाशक्तिको जितनी प्रबल बनाते सफलता उतनी ही सुगमता और शीघ्रतासे प्राप्त होती है। प्रत्ये काम अपनी योग्यता और विश्वासपर भी अवलम्बित रहता है। जब तक हम अपनी किसी शक्तिपर विश्वास नहीं करते तबतक व निर्जीवसी रहा करती है। यही कारण है कि अनेक कार्यसाधनर्क क्षमता रखनेवाले पुरुष भी सुस्त पड़े रहते हैं; परन्तु जब उन सामने कोई विकट कार्य आ खड़ा होता है और जब वे उसे पू करनेकी प्रतिज्ञा करते हैं, तब उन्हें यह जाननेका सौभाग्य मिलत है कि मुझमें शक्ति है और मैं काम करनेकी ताकत रखता हूँ। परन्तु खेद है कि अनेकोंको ऐसा सौभाग्य मुश्किलहीसे मिलता है।

कई मनुष्य दृढ़ इच्छाका अर्थ जिद्दीपन समझते हैं और यह उनकी भूल है। दृढ़ इच्छा और जिद्दीपनमें बड़ा अन्तर है। कबतक किस काममें लगे रहना चाहिए और कब उसे बदल देना चाहिए, इस बातका निर्णय करनेमें प्रबल इच्छा रखनेवाला पुरुष उदारता और बुद्धिमानीसे काम लेता है—वह उतने ही पैर फैलाता है, जितनी चादर होती है। परन्तु जिद्दीपुरुष एक गधेके समान है जो अपने हठरूपी बोझेको उचित अनुचित और अपनी भलाई बुराईका विचार किये बिना ही आदिसे अन्ततक लिये जाता है।

अमेरिकाके एक प्रसिद्ध और परोपकारी पुरुष होवारडके विषयमें कहा जाता है कि उसकी इच्छाशक्ति बहुत प्रबल थी और व हमेशा एक वस्तुमें लिप्त रहनेकी आश्चर्यजनक दृढ़ता रखत था। परन्तु वह जिद्दी नहीं था और हमेशा ऐसी बुद्धिमानी औ [उदा]रतासे काम लिया करता था कि उसके आचरणमें कभी जि[द] नहीं दिखाई दिया।

हम इस बातको अन्तःकरणमे स्वीकार करते है कि मनुष्यकी सभी अंतःशक्तियाँ उसकी इच्छामें समाई रहती है और इस संसारकी प्रत्येक वस्तु दृढ इच्छा द्वारा प्राप्त की जा सकती है। अतएव हमको सबसे पहले अपनी इच्छाशक्तिको दृढ करना चाहिए और दृढ इच्छाशक्तिको बाधा पहुँचानेवाली कमजोरियों—निर्बलताओंको दूर करनेका प्रयत्न करना चाहिए। 'मै नहीं कर सकता' 'मुझसे नहीं हो सकता' ऐसे कायरताके विचारोंको एक ओर रखकर दृढ़ताके साथ कहना चाहिए कि 'मै कर सकता हूँ' 'मुझमे शक्ति है'–तभी साहस पैदा होगा और निर्बलता दूर भाग जायगी।

पैसा संबंधी सफलताके कालेजमें अभ्यास करनेवाले विद्यार्थियोंके मनकी प्रकृति या झुकाव सदैव कार्यतत्परताकी ओर होना चाहिए। इससे दो लाभ होते है–एक तो वे अपनी योग्यताको पहिचानकर उसपर विश्वास करने लगते है और दूसरे उनकी इच्छाशक्ति दृढ हो जाती है। ऐसा होनेपर वे चाहे जैसी कठिनाईके सामने अपने मनको स्थिर रखकर अपने इच्छारूपी अश्वको सफलताकी ओर दौडा सकते हैं।

ऐसी इच्छा केवल साहस और बलको ही नहीं बढ़ाती, प्रत्युत वह अपने आसपासवालोंपर भी अपना गहरा प्रभाव डालती है। किसी पिछले प्रकरणमें हम कह चुके है कि प्रत्येक मनुष्य अपने मानसिक झुकावके अनुसार दूसरोंको अपनी ओर आकृष्ट करता है और वह स्वतः भी उनकी ओर खिचता है। इसी तरह मनःशक्तिका एक सच्चा योद्धा अपनी ओर वैसे ही मनशक्तिके योद्धोंको खींचता है और कुछ समयमें वह उनका गुरु बन जाता है

और परिणाममें वह स्वतः प्रबल मनशक्तिकी ओर आकृष्ट
बड़ा शक्तिसम्पन्न हो जाता है। पाठको! तुम अवकाशके समय
इस बातका विचार करना कि नैपोलियन जैसे दृढ़ मनके
आसपास वैसे ही लढ़ैया योद्धा क्यों खड़े रहते थे?

"Back of thy parents and grand parents lies
The great Eternal will; that, too, is thine
Inheritance-Strong, beautiful, divine;
Sure lever of success for one who tries.
Ella Wheeler Wilcox."

तुम अपने मा-बाप और पूर्वजोंकी जोरावर इच्छाके सुन्दर
मजबूत और ईश्वरीय वारिस हो। प्रयत्न करने ही से तुम उसके
अधिकारी हो सकते हो।

नववाँ प्रकरण ।

मानसिक छाप ।

गत आठ प्रकरणोंमें हमने अनेक भ्रमात्मक और नासमझीके विचारोंका खंडन करके उनकी वास्तविकता बतलानेकी चेष्टा की है। सदुपाय द्वारा पैसा पैदा करनेके विषयमें भी हम अनेक ज्ञातव्य बातें लिख चुके हैं।

पहले प्रकरणमें पैसा सम्बन्धी नये विचारोंको प्रकट करके घोर अंधकारमें पड़े हुए इस विषयको प्रकाशमें लानेकी चेष्टा की है और अंतमें बतला दिया है कि जिस प्रकार हवा, पानी और धूप आदि पर प्रत्येक व्यक्तिका अधिकार है—हरकोई उनको प्राप्त कर सकता है, उसी तरह प्रामाणिकपनसे पैसा पैदा करनेका अधिकार भी प्रत्येक व्यक्तिको है—हरएक उसका अधिकारी हो सकता है।

दूसरे प्रकरणमें मानसिक झुकावका वर्णन किया गया है। जिसे पढ़कर पाठकोंकी प्रामाणिक पैसा प्राप्त करनेकी योग्यता और शक्तिका

विकास हुआ होगा। तुम अपने मानसिक झुकाव या उत्तम आदतोंके द्वारा अपने आसपास एक साहस तथा आशापूर्ण वातावरण फैलाते हो और आकर्षणके नियमानुसार वैसे ही साहसी तथा उत्तम विचारोंको अपनी ओर खींचते हो—इन सब बातोंका खुलासा दूसरे प्रकरणमें किया गया है।

तीसरे प्रकरणमें तुमको अपने मनसे निर्बलता, भय अकर्मण्यता और चिन्ताको दूर करनेकी सलाह दी गई है।

चौथे प्रकरणमें विश्वासका स्वरूप और उसकी उचित आवश्यकता दिखलाई गई है।

पाँचवें प्रकरणमें अपनी कई एक छुपी शक्तियोंको प्रगट करनेकी युक्तियाँ लिखी गई हैं। जिन शक्तियोंके अस्तित्वका भी हमको पता नहीं है, वे कठिनाईके अवसरपर किस तरह प्रकट होकर सहायक होती हैं और हमारे साहस और बलको कहाँ तक बढ़ा देती हैं, इन सब बातोंका विचार किया गया है।

छठे प्रकरणमें आकांक्षाको लक्ष्य मानकर तत्सम्बन्धी विचाररूपी तीरोंसे लक्ष्यवेध करनेकी विधि बतलाई गई है।

सातवें प्रकरणका परदा उलटकर पुस्तकके सफेद पृष्ठरूपी स्टेजपर उत्साहको खड़ा करके इच्छाशक्तिको विकसित करनेका एक नया दृश्य दिखलाया गया है।

आठवें प्रकरणमें भिन्न भिन्न रूपसे इच्छाकी उपयोगिता और सच्ची कीमत बतलाई है।

उक्त गुणोंका वर्णन कर चुकनेके पश्चात् अब हम इस प्रकरणमें अपने विचारोंका प्रभाव अपने मनपर तथा दूसरोंके मनपर कैसा ... है इसका वर्णन करते हैं। मान लो कि तुम्हारा मन मोम और

तुम्हारे विचार मोहर या छाप हैं। जैसे मोमपर छाप रह जाती है, उसी तरह तुम्हारे मनपर भी तुम्हारे विचारोंकी छाप लग जाती है। इतना ही नहीं, किन्तु तुम दूसरोंके मनपर भी अपने विचारोंका प्रभाव डालते हो। यह बात कोई कपोलकल्पना या गप नहीं है, प्रत्युत यह एक सच्चा और विज्ञान सम्मत विषय है।

बहुधा देखा जाता है कि कई मनुष्य किसी गप या असत्य बातको बारम्बार कहते कहते स्वतः उसे मानने लगते हैं और उन्हें प्रत्येक बातमें झूठ बोलनेकी आदत पड़ जाती है। नकल करने वाले व्यक्ति कुछ समयमें असलहीके समान बन जाते हैं। मुझे स्मरण है कि एक मनुष्यने अटक अटक कर बोलनेवाले एक व्यक्तिकी नकल करते करते अपना उच्चारण बिगाड़ लिया था। नाटकवाले अपने अभ्यासके अनुसार गम्भीर, शोकयुक्त और साधारण मौकोंपर भी अपना वही नाटकीयदृश्य दिखलाते हैं। इन बातोंसे प्रमाणित होता है कि हमारे विचारोंकी मजबूत छाप हमारे हृदयपर पड़ती है, जो उसपर आजन्म अंकित रहती है।

मुझमें हिम्मत है, मैं कर सकता हूँ, इत्यादि शब्द कह देनेसे ही उनकी छाप मनपर नहीं लग जाती है, पर हाँ, इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ऐसा बारम्बार कहते रहनेसे कुछ समयमें उसका दृढ़ प्रभाव-मजबूत असर मनपर पड़ता है। यह बात ऊपर लिखी जा चुकी है कि केवल मुँहसे कह देनेसे कुछ काम नहीं चलता है। जो बात मुँहसे कही जाय, उसका चित्र मनमें अंकित करना चाहिए। जैसे नाटकवाले नया खेल शुरू करनेके पहले रिहर्सल*

*रिहरसल—नाटकका अभिनय करनेके प्रथम उसके अभ्यास या जांचके लिए खेल खेलना।

करते हैं, उसी तरह हमको भी अपने जीवनके महान् नाटकके लि अर्मीसे रिहरसल करना चाहिए।

तुम अपनी आकांक्षाओं मनकी मुरादोंको अपने मनके लक्ष्य रक्खो, जिस वस्तुकी तुम इच्छा रखते हो तत्सम्बधी विचारोंको दौड़ाओ और अर्मीसे रिहरसल करनेका अभ्यास शुरू कर दो पाठको! यह आत्मतत्त्व (साइकोलोजीकल) विद्याका एक महत् नियम है, इसे समझो, मनन करो और अपने अनुभवसे उसे अटल सिद्धांत बनाओ।

तुम जिस विषयकी आकांक्षा या चाह करोगे तुम्हारे मनके काचपर उसीका चित्र अंकित हो जावेगा—उसीकी छाप लग जावेगी। तुम अपने मनमें प्रामाणिक पैसेकी चाह अंकित करो साहससे उसे दृढ बनाओ और फिर देखो कि तुममें क्या क्या हेर फार हुआ है। ऐसा करते ही तुम्हारे विचारोंमें फर्क पड जायगा सुस्ती दूर हो जायगी और तुम अपनी आकांक्षाओंको पूर्ण करनेके लिए आतुर हो उठोगे।
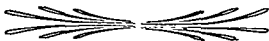
दसवाँ प्रकरण।

समाधानी या समस्वरता।

समस्त प्रकृति और प्रकृतिकी उत्पत्तिमें समाधानी या समस्वरता (Harmony) व नियम काम कर रहा है। सारी प्रकृति एक छोरसे दूसरे छोरतक रातदिन काम करती रहती है। प्रकृतिमें कहीं भी प्रतिबंध रुकावट, स्थिरता आदि नहीं है। आजकल विज्ञानमें सिद्ध हो चुका है कि एक रजकणसे लेकर पत्थर, पानी, मनुष्य, पशु, पक्षी, नक्षत्र आदि सब रातदिन गति अवस्थामें रहते हैं और इस हलचलमें हम स्पष्ट रीतिसे समाधानीके कार्यको देखते हैं। जिस प्रकार गायनमें समाधानी मालूम पड़ती है, उसी तरह प्रकृतिकी प्रत्येक क्रिया अपनी हलचलमें जो गाना गाती है, उसमें भी समाधानी रक्षित रहती है।

देखो, ग्रह—नक्षत्र अपनी अपनी कक्षामें सूर्यके आसपास घूमा करते हैं। चन्द्रमा अपने ग्रहके चारों ओर घूमता है; पृथ्वी, गुरु, शनि आदि ग्रह अपने अपने चन्द्रमोंके साथ सूर्यकी परिक्रमा करते हैं। अहा ! यह कैसी विचित्रता है ! सभी समाधानीसे अपना अपना काम करते हुए दिखाई देते हैं। सहस्रों मील भरे पड़े हुए अपार समुद्रकी लहरें नियमित रूपसे–एकके बाद एक आती हैं, और पीछे लौट जाती हैं,—यह समाधानीका एक निर्विवाद उदाहरण है। मनुष्यका हृदय समान रीतिसे धक्के देकर, फेंफड़े एक समान श्वासोच्छ्वास क्रिया करके समाधानीका परिचय देते हैं। सायंसके सूक्ष्म यंत्रोंके द्वारा करोड़ों मीलोंसे आनेवाले सूर्य अथवा ताराओंके प्रकाशमें भी समाधानीका अस्तित्व दिखाई देता है।

मानलो कि कुछ समयके लिए यह पृथ्वी यदि अपनी कक्षामें सूर्यकी परिक्रमा करना छोड़ दे या कोई ग्रह, उपग्रह कुछ समयके लिए अपनी अधीनताके सामने सिर उठावे या चन्द्र आदि अपने मार्गको परित्याग कर दें तो इसका कैसा भयंकर परिणाम हो ! इस सुन्दर जगतकी कैसी दुर्दशा हो ? इस विषयकी कल्पनामात्रसे कलेजा काँप उठता है।

गायनमें भी उसके अत्यंत सूक्ष्म नियमोंपर ध्यान देनेसे समाधानी या समस्वरताका कायदा दिखाई देता है। तुमने सुना होगा कि वायोलीन और पाइपकी आवाजसे बड़े बड़े पुल हिलने लगते हैं और यदि उनका गाना जारी रक्खा जाय तो वे काँपते हुए पुल हवामें झोका खाकर टूटकर नष्ट-भ्रष्ट हो जावें। तुच्छ बाजोंमें

बड़े बड़े बादशाही महल, भारी भारी कारखाने और बड़ी बड़ी अट्टालिकायें भी एक क्षणमें मिट्टीमें मिल जाती हैं। *

यदि तुम कुछ बारीकीके साथ देखोगे तो तुम्हें इन सबमें ध्वनि (vibrations) और ध्वनिके ग्रहण करनेका कायदा काम करता हुआ दिखाई देगा। यदि तुम प्रकृतिमें चलनेवाली ध्वनियोंको ग्रहण करनेका अभ्यास डालोगे तो तुम बड़ी बड़ी चीजोंको व्यवहारमें ला सकोगे। पाठको! यह निरा स्वप्न नहीं है, मनुष्यके मनमें भी वैसी ही ध्वनियाँ उठा करती है। यदि तुम कुछ समयके लिए सांसारिक झगड़ोंसे निवृत्त होकर शान्तिसे अपने मनको तलाशो तो तुम्हें मालूम होगा कि हम प्रकृतिमें बहनेवाली महान् ध्वनिके साथ मिलकर काम कर रहे हैं। आजकल यूरोप और अमेरिकाके साधारणसे साधारण व्यापारी और धंदेवाले भी इस नियमको अच्छी तरह जानते हैं। वे लोग दिनके नियत समयमें से कुछ समयको बचाकर और एकान्तमें बैठकर अपने धंदेकी सफलतापर विचार किया करते हैं—मनको एकाग्र करते हैं।

एकाग्रतामें बड़ी शक्ति है। प्रत्येक विचारशील पुरुषको उचित है कि वह प्रतिदिन कुछ समय मनको एकाग्र करके अपने कामधंदों-पर विचार किया करे और प्रकृतिमें चलनेवाली महान् क्रियासे सम्मि-

* जिन पाठकोंको इस विषयमें कुछ अधिक जाननेकी इच्छा हो उन्हें—"The building of the cosmos," पृष्ठ १७, १८, २०, २२, २३, २४, २५; Prof. Tyndall's lectures on "Sound," "Keely and his Discoveries" by Mrs. Bloomfield-moore; "Lucifer" Jan, 1894, P 356, 'The Theosophic gleaner" Vol. III P. 204; "Secret Doctrine" Vol. I P. 201-606 आदि देखना चाहिए।

उसे छोडनेको कभी तुम्हारा जी न चाहेगा। प्रतिदिन कुछ नियत समयको बचाकर किसी एकान्त कोठरीमें बैठो। ऐसी व्यवस्था करो, कि जिससे तुम्हारे इस समयमें जरा भी बाधा न आने पावे। फिर शान्त मनसे आरामसे बैठ जाओ और शरीरको ढीला करके गहरी श्वासें लेना शुरू करो। ऐसा करनेसे तुम्हारा मन और शरीर शान्त तथा एकाग्र बनेगा। फिर शीघ्र ही कुछ क्षणके लिए दुनियाके समस्त सुख दु:खोंको एकदम भुला दो और अपने भीतर मनकी ओर विचारोंको दौड़ाओ; परंतु इस समय कोई भी बाह्य जंजाल या शरीरके दुःखोंका विचार हृदयमें न आने पावे। शान्तिपूर्वक मानसिक गंभीरताका अनुभव करो। फिर सोचो कि—" मैं प्रकृतिमें बहनेवाली महान समाधानीकी धाराका एक बिन्दु हूँ।" मनमें ऐसा विचार आते ही तुम्हें ऐसा अनुभव होने लगेगा कि मैं इस शान्त, मधुर और स्थिरताकी दशामें प्रकृतिके साथ मिल रहा हूँ—एक हो रहा हूँ। इस अवस्थामें तुम्हें एक महान् आनंदका अनुभव होगा और ऐसा मालूम पड़ेगा कि मुझमें एक नये बल, नई शक्ति और नये उत्साहका सचार हो रहा है। ऐसा करते करते कुछ दिनोंके पश्चात् तुम अपने कामोंमें अपनी इच्छासे भी अधिक लगे रहोगे और सफलता प्राप्त करोगे।

यदि तुम चाहो तो आर्थिक-सफलताकी ओर अपने मनको झुका सकते हो। यह विषय समाधि लगाकर बैठनेवाले आलसी निद्रे और आकाश पाताल फाड़कर शोध लगानेवाले म लमस्तोंके लिए नहीं है, वरन व्यापारियों, घरेवालोंके लिए जो अपने दुर्दैवी जीवनके साधारण संकटों, कर्तव्यों और उत्तरदायित्वको समझते हैं—विशेष उपयोगी है।

तुम जितना अभ्यास डालोगे तुम्हारे अंतर-मनसे उतने ही नये विचार, नये भाव और मौलिकता-जिसे अंगरेजीमें Originality कहते हैं—विकसित होगी। और धीरे धीरे उनपर तुम्हारा इतना अधिकार हो जायगा कि तुम अपनी हरएक स्थितिमें प्रामाणिकरूपसे पैसा प्राप्त करनेकी नई युक्तियोंको उद्भवित कर सकोगे।

ग्यारहवाँ प्रकरण ।

मानसिक चित्राङ्कन ।

आ प्रामाणिकपनसे पैसा पैदा करनेके लिए पहले मनमें इच्छित वस्तुका चित्राङ्कन करना कितना आवश्यक है—इस प्रकरणमें इसी विषयका विवेचन किया जाता है।

पाठको ! क्या आप कह सकते हैं कि गंगा या यमुना नदीके भारी भारी पुल, उसके विशाल खंभे या उसके पेच रक् आदि छोटी छोटी वस्तुयें भी पहले उनके निर्माताओंके मस्तिष्कमें अस्तित्व नहीं रखती थीं ? क्या आप कह सकते हैं कि बम्बई, कलकत्ता आदि बड़े बड़े शहरोंकी सुविशाल इमारतें, अट्टालिकायें, मिलें और आकाशमें सिर उठानेवाली मीनारोंके नक्शे उनके बनानेवाले इंजीनियरोंके मनमें पहले नहीं खिंच चुके थे ! क्या आपके पाकेटमें टक टक करनेवाली नाजुक घड़ीके कल-पुर्जे फैक्टरीमें बननेसे पहले उसके आविष्कारकोंके मनमें नहीं बन

चुके थे ? यदि उस घड़ीके किसी एक बारीकसे बारीक पुर्जेका आकार पहले उसके आविष्कर्त्ताके मनमें न बना होता तो घड़ी कदापि न बन सकती ।

किसी एक वस्तुके बननेके पहले उसका मानसिक चित्र मनुष्यके मनमें खिंचता है—इसका अपवाद ही नहीं है । घर, पुल, हथियार, तोप, छाता और अपनी नजरमें आनेवाली सहस्रों चीजें पहले उनके शोधकोंके मनमें बनी थीं । पाठको ! आज हम इस पुस्तकको आपके सामने उपस्थित करनेमें समर्थ हुए हैं, इसका मूल कारण भी हमारे मनमें उठे हुए पूर्व विचारोंका प्रतिरूप है । इस स्थलपर मुझे एक प्रसिद्ध अँगरेज लेखकके वचनोंका स्मरण हो आया है । वह लिखता है—"हमारा मस्तिष्क मानो एक प्रयोगशाला है, कि जिसमें हमारा तमाम भविष्य बनता है । अथवा वह उस पत्थरकी खानिके समान है, जिससे सफलताका मंदिर बनाया जाता है । हमारे मस्तिष्कमें समस्त ईश्वरीय शक्तियाँ विविध पदार्थोंके रूपमें भरी पड़ी हैं ।"

प्रत्येक वस्तु पहले मनमें बनती है, फिर हाथोंसे बनाई जाती है. पहले उसका मानसिक या सूक्ष्म स्वरूप तैयार होता है और फिर उसका स्थूल और दृश्य स्वरूप बनता है । इसका मतलब यह है कि जब हम किसी वस्तुको हाथोंसे बनाने लगते हैं, तब इतना ही करते हैं कि मनमें बनाई हुई वस्तुको आसपासके पदार्थों (Matter) से गढ़ लेते हैं: अथवा इस वस्तुको हम अपने मस्तिष्कमेंसे ऐसे रूपमें खींच लाते हैं कि जिसे सब देख सकते हैं । कई लोग ऐसे होते हैं कि वे अपने प्रत्येक कामको अधूरा छोड़ देते हैं । ... कारण यह है कि उनका मानसिक-चित्र भी अधूरा और

टूटी-फूटी हालतमें रहता है । जो लोग मनमें पहले पूरा और सुडौल चित्र अंकित कर लेते हैं वे ही उसे वस्तुके स्वरूपमें परिणत कर सकते हैं ।

तुमने अमेरिकाके थोमस् लेन्सन नामक एक प्रसिद्ध व्यापारीके विषयमें सुना होगा । वह कहता था कि "जब मैं छोटा था तब मेरे मनमें सुन्दर मकान, सुन्दर घोड़े, अजोड़ गाय-बैल रखने और प्रामाणिक तथा सुखी जीवन बितानेका एक सुदर चित्र खिंचा करता था ।" वह कहता है कि "जब मैंने उनके लिए प्रयत्न करना शुरू किया तब उनमें मानो जीव आ गया--वे सभी मेरे लिए सुलभ बन गये ।"

पैसासंबंधी सफलता प्राप्त करनेके लिए पहले मनमें उसका एक सुन्दर चित्र खड़ा करो और फिर उसकी प्राप्तिके लिए काम करना प्रारंभ कर दो-फिर सफलता सजीव होकर तुम्हारे सामने आप ही खड़ी हो जायगी । प्रत्येक मनुष्यको अपना जीवनपथ निश्चित करना चाहिए । [परंतु खेद है कि भारतवर्षमें शिक्षाका ध्येय ऐसा पेचीदा है कि एक २५ वर्षका युवक कालेजसे निकलकर विचार करता है कि अब मुझे किस लाइनपर जाना चाहिए ? जो मैं व्यापारी लाइन ग्रहण करता हूँ तो मेरी फिलासोफी और लाजिकका क्या उपयोग होगा । भारतवर्षमें विद्यार्थियोंको उनके ध्येयके अनुसार शिक्षा नहीं दी जाती है ।] जीवनका ध्येय निश्चित कर लेनेके पश्चात् उसका मानसिक-चित्र तैयार करना चाहिए और उसीके अनुसार अपना समस्त जीवन व्यतीत करना चाहिए । जो तुम ग्रन्थकार होनेकी इच्छा रखते हो, तो मनमें पहले उसका एक सर्वांगपूर्ण सुन्दर चित्र तैयार करो । तुम ऐसा समझो कि हमारा प्रयत्न सफल हो गया

चुके थे। यदि उस मशीनके किसी एक भागका वर्तमान रूप
आकार पहले उसके आविष्कारके मनमें न बना होता तो वही यं
न बन सकती।

किसी एक वस्तुके बननेके पहले उसका मानसिक चि
मनुष्यके मनमें खिंचता है—इसका अपवाद ही नहीं है।
घर, पुल, हथियार, तोप, जहाज और अपनी नजरसे गुजरने
सहस्रों चीजें पहले उनके शोधकोंके मनमें बनी थीं। यदि
आज हम इस पुस्तकको आपके सामने उपस्थित करनेमें समर्थ
हैं, इसका मूल कारण भी हमारे मनमें उठे हुए पूर्व विचारोंका प्रति
है। इस स्थलपर मुझे एक प्रसिद्ध अंग्रेज लेखकके वचनों
स्मरण हो आया है। वह लिखता है—"हमारा मस्तिष्क मा
एक प्रयोगशाला है, कि जिसमें हमारा तमाम भविष्य बनता है। अथ
वह उस पत्थरकी खानिके समान है, जिससे सफलताका मंदि
बनाया जाता है। हमारे मस्तिष्कमें समस्त ईश्वरीय शक्तियाँ विवि
पदार्थोंके रूपमें भरी पड़ी हैं।"

प्रत्येक वस्तु पहले मनमें बनती है, फिर हाथोंसे बनाई जाती है
पहले उसका मानसिक या सूक्ष्म स्वरूप तैयार होता है और फि
उसका स्थूल और दृश्य स्वरूप बनता है। इसका मतलब यह है
कि जब हम किसी वस्तुको हाथोंसे बनाने लगते हैं, तब इतना ही
करते हैं कि मनमें बनाई हुई वस्तुको आसपासके पदार्थों (Matter)
से गढ़ लेते हैं; अथवा इस वस्तुको हम अपने मस्तिष्कमेंसे ऐसे
रूपमें खींच लाते हैं कि जिसे सब देख सकते हैं। कई लोग ऐसे
होते हैं कि वे अपने प्रत्येक कामको अधूरा छोड़ देते हैं।
इसका कारण यह है कि उनका मानसिक-चित्र भी अधूरा और

टूटी-फूटी हालतमें रहता है। जो लोग मनमें पहले पूरा और सुडौल चित्र अंकित कर लेते हैं वे ही उसे वस्तुके स्वरूपमें परिणत कर सकते हैं।

तुमने अमेरिकाके थोमस लेम्सन नामक एक प्रसिद्ध व्यापारीके विषयमें सुना होगा। वह कहता था कि "जब मैं छोटा था तब मेरे मनमें सुन्दर मकान, सुन्दर घोड़े, अजोड़ गाय-बैल रखने और प्रामाणिक तथा सुखी जीवन बितानेका एक सुंदर चित्र दिखा करता था।" वह कहता है कि "जब मैंने उनके लिए प्रयत्न करना शुरू किया तब उनमें मानो जीव आ गया-वे सभी मेरे लिए सुलभ बन गये।"

धंधासंबंधी सफलता प्राप्त करनेके लिए पहले मनमें उसका एक सुन्दर चित्र खड़ा करो और फिर उसकी प्राप्तिके लिए काम करना प्रारंभ कर दो-फिर सफलता सजीव होकर तुम्हारे सामने आ खड़ी हो जायगी। प्रत्येक मनुष्यको अपना जीवनपथ निश्चित करना चाहिए। [परन्तु खेद है कि भारतवर्षमें शिक्षाका ध्येय ऐसा दूषित है कि एक २५ वर्षका युवक कालेजसे निकलकर विचार करता है कि अब मुझे किस लाइनपर जाना चाहिए? जो मैं व्यापारी लाइन ग्रहण करता हूँ तो मेरी फिलासोफी और लाजिकका क्या उपयोग होगा। भारतवर्षमें विद्यार्थियोंको उनके ध्येयके अनुसार शिक्षा नहीं दी जाती है।] जीवनका ध्येय निश्चित कर लेनेके पश्चात् उसका मानसिक-चित्र तैयार करना चाहिए और उसीके अनुसार अपना समस्त जीवन व्यतीत करना चाहिए। जो तुम इन्जीनियर होनेकी इच्छा रखते हो, तो मनमें पहले उसका एक सर्वाङ्गपूर्ण सुन्दर चित्र तैयार करो। तुम ऐसा समझो कि हम एक प्रधान स्वतन्त्र इंजी-

है और हम धनवान् हो गये हैं, उसको हम व्यवहारमें ला रहे हैं, खर्च कर रहे हैं—ऐसे प्रबल विचारोंसे उस चित्रमें जी डालनेकी चेष्टा करो, तुम्हारा प्रयत्न अवश्य सफल होगा।

तुम सोच सकते हो कि एक मीनार, पुल या किला बनानेवाले इंजीनियरके मनमें जो पहले उसका चित्र न खिंचता, तो क्या होता? वह कुछ भी न बन सकता। अधिकांश लोग 'पैसा चाहिए' 'पैसा चाहिए' की पुकार किया करते हैं और उसके लिए हाथपर हाथ रक्खे बेकार बैठे रहते हैं। उस समय वे अपने मनमें उसका मानसिक-चित्र अंकित नहीं करते हैं। एक बढ़ई किसी लकड़ीको लेकर उसे एकदम काटने या छीलनेके लिए नहीं बैठ जाता है, परंतु वह जो कुछ बनाना चाहता है, पहले उसका चित्र मनमें खींचता है और फिर तदनुसार काम प्रारम्भ करता है। फलतः उसकी वस्तु सुन्दर, सुडौल और अच्छी बनती है।

पहले हमको यह जानना चाहिए कि हमको आवश्यकता किस वस्तुकी है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं—आकांक्षाओंको न जानेंगे, तो हमको कुछ भी न मिलेगा। संसारके सभी विचारशील पुरुष अपने मनके विचारोंका तिरस्कार नहीं करते, किन्तु उन्हें काममें लाते हैं। वे किसी एक कामको करनेके पहले उसका पूर्ण विचार करते हैं, उसका मनमें चित्र खींचते हैं, उसकी कठिनाइयोंको हल करते हैं, हानि-लाभका विचार करते हैं और फिर उसके अनुसार काम करनेमें लग जाते हैं। काम करनेका यही नियम है। इसीके अनुसार काम करनेसे सच्ची सफलता प्राप्त होती है।

बारहवाँ प्रकरण ।

एकाग्रता ।

"The Secret of power in any Occupation or in the Art or business, is concentration."

R. Bridge.

"कलाकुशलता या उद्योगमें बलका परिमाण एकाग्रतापर निर्भर रहता है।"

—आर ब्रिडज ।

एकाग्रताका अर्थ सभी पाठक समझते हैं और उनमेंसे अनेक पाठक समय समयपर उसे व्यवहारमें भी लाते होंगे। परंतु खेद है कि उसके महत्व को बहुत कम लोग समझते हैं। कई लोगोंको तो उसके विषयमें यथार्थ भी अन्दाज नहीं होता है। अतएव इस प्रकरणमें हम एकाग्रताके विषयमें अपने कुछ विचार लिखना उचित समझते हैं।

एकाग्रता क्या है ? किसी कामको करते समय सब ओरसे मनको खींचकर केवल उसी काममें लगाना अथवा किसी एक वस्तुको एक मध्य-बिन्दुकी ओर ले जाकर स्थित कर देना ही एकाग्रता है। उपरिलिखित मध्य-बिन्दु शब्द बहुत उपयोगी है, उसे भलीभाँति समझानेके लिए एक दृष्टान्त लिखते हैं। एक 'सन–ग्लास' या उस गोल फूले हुए काचको लो जिसे धूपमें रखनेसे उसके नीचेकी वस्तु जलने लगती है। उस काचमें यह गुण होता है कि वह सूर्य किरणोंको एक मध्य-बिन्दुपर एकत्रित करता है। जिस मध्य-बिन्दु पर सब किरणे एकत्रित होती हैं, उस जगह इतनी अधिक गर्मी बढ़ जाती है कि उसके नीचेकी वस्तु जलने लगती है।

एकाग्रतासे काम करनेकी शक्ति बहुत बढ़ जाती है। जिस तरह सन-ग्लास सूर्य-किरणोंको एक मध्य बिन्दुपर एकत्रित करता है, उसी तरह हमको भी अपनी आकांक्षाओंपर मनको एकाग्र करना चाहिए। परिश्रम और शक्तिको एक मध्य-बिन्दुकी ओर झुका देना चाहिए-और मनको लक्ष्य बिन्दुसे जरा भी इधर उधर या विचलित न होने देना चाहिए।

अधिकांश लोग एकाग्रता नहीं रख सकते हैं, वे जिस वस्तुको देखते हैं, उनका मन उसीकी ओर लग जाता है। एक समयमें कई विचार या कार्य उनके सामने पेश होते हैं, और उनमेंसे वे किसीको भी पूरा नहीं कर पाते हैं। इस तरह उनकी शक्ति व्यर्थ नष्ट हुआ करती है। ऐसे लोगोंको कभी किसी काममें सफलता नहीं मिल सकती है। वे कितना ही परिश्रम करें, कितना ही सिर लड़ावें परंतु वे रहते जहाँके तहाँ ही हैं।

एकाग्रताका अभ्यास पहले छोटी छोटी वस्तुओंसे प्रारंभ करना चाहिए; पीछे अभ्यास बढ़ जानेपर बड़ी बड़ी वस्तुओंपर मन स्थिर किया जा सकता है। किसी एक कामको करते समय दूसरे कामका विचार मनमें न लाना एकाग्रता रखनेकी प्रथम सीढ़ी है। यह एक कला है जो अभ्याससे सीखी जा सकती है। प्रसिद्ध प्रसिद्ध पुरुषोंकी सफलताका रहस्य एकाग्रता ही है। वे एक काम करते समय अन्य विचारों और चिन्ताओंको मनमें कभी स्थान नहीं देते हैं— उनका मन उस काममें तन्मय हो जाता है।

पहले लिख चुके हैं कि एकाग्रता सीखनेकी प्रथम कुंजी अपने चंचल और भ्रमणशील मनको वशमें करना है। यदि वह वशमें आगया तो समझो कि एकाग्रता आ गई। मनको किसी एक वस्तुपर स्थिर करनेसे तत्संबंधी नये नये विचार और नई नई युक्तियाँ एक मध्य-बिन्दुपर एकत्रित होने लगती हैं। फिर पूर्वोक्त आकर्षण शक्ति (the Law of Attraction) के अनुसार बाहरसे वैसे ही विचार उस मध्य-बिन्दुकी ओर खिंचने लगते हैं। अधिकांश पुरुष एकाग्रताके अभावसे अपनी मानसिक शक्तियोंको बिखरी रखकर अपनी किसी भी आकांक्षाको पूर्ण नहीं कर सकते हैं।

जो लोग हमारे इन प्रामाणिक पैसासम्बन्धी विचारोंसे सहानुभूति रखते हैं उन्हें उचित है कि वे अपने मनको एकाग्र करनेकी आदत डालें। पहले किसी एक वस्तुपर मनको एकाग्र करो और जबतक उसका पूरा विचार न कर लो तबतक उस परसे मनको न हटाओ। एक काम करते समय दूसरे कामोंकी चिन्ताको कभी पास मत फटकने दो। तुम जिस कामको कर रहे हो—जो तुम्हारे सामने

तेरहवाँ प्रकरण ।

दृढ़ता ।

" दुख, शोक, जब जो आ पड़े, सो धैर्यपूर्वक सब सहो ।
होगी सफलता क्यों नहीं, कर्त्तव्य-पथपर दृढ़ रहो ।"

—मैथिलीशरण गुप्त ।

गत प्रकरणमें हम एकाग्रताके विषयमें लिख चुके हैं और उसमें हमने बतलाया है कि यदि हम प्रतिक्षण अपने विचार बदलते रहें, कभी यह और कभी वह काम करने लगें, तो हमको कभी सफलता नहीं मिल सकती है। कहनेका तात्पर्य यह है कि हमको अपने कामपर दृढ़ता, धैर्य और एकाग्रतासे विचार करना चाहिए। यदि तुम किसी वस्तु या कामपर मन लगाना सीख गये हो तो तुम्हें दृढ़ता सीखनेमें कुछ भी कठिनाई न होगी।

किसी एक कामपर मन लगाना बहुत अच्छी बात है। अनेक परिश्रमी और होशियार मनुष्य अपने कामोंमें सदैव निष्फल हुआ करते हैं, इसका मूलकारण दृढ़ताकी कमी है—वे किसी एक काम-पर मन नहीं लगाते हैं। शिकारी कुत्ता जब शिकारके पीछे लगता है, तो जबतक वह उसे मार नहीं डालता है, तबतक उसका पीछा नहीं छोड़ता है, दिन दिनभर उसीके पीछे दौड़ता जाता है—इसी का नाम दृढ़ता है।

यदि आसुरी दृढ़ता रखनेवाले व्यक्तिसे तुम्हारा साक्षात् हो, तो तुम आश्चर्यके साथ देखोगे कि वह व्यक्ति खंभेकी नाईं अचल रहकर अपने कामको करता रहेगा। तुम उसे चाहे मारो-पीटो या अन्य किसी प्रकार तंग करो, पर वह पर्वतके समान अचल बना रहेगा। हजारों विघ्न—बाधायें भी उसे कामसे विचलित न कर सकेंगी और जबतक वह उस कामको पूरा न कर लेगा तबतक उसका पीछा न छोड़ेगा—इसीका नाम दृढ़ता है।

जो मनुष्य अपने विचारों और कार्य्य-क्रमको सदैव बदलता रहता है उसमें दृढ़ताका अभाव समझो। ऐसे व्यक्ति किसी एक भी कामको पूरा नहीं कर सकते हैं। तुम जिस कामको पकड़ो उसे खूब दृढ़ताके साथ पकड़ो। हजारों विघ्न बाधाओंके आनेपर भी उसमें जरा भी शिथिलता मत आने दो। समयकी कुछ परवा मत करो। उस काममें चाहे कितने ही दिन, महीने और बर्ष क्यों न बीत जायँ, परंतु सफलता प्राप्त होनेकी अवधि तक उसे दृढ़ हाथोंसे पकड़े रहो। अपने प्रत्येक काममें ऐसी ही दृढ़ता दिखलाओ। इस विषयमें हम प्रसिद्ध प्रसिद्ध व्यापारियों, शिक्षितों और विद्वानोंके वाक्य नीचे लिखते हैं—

जान फोस्टर लिखते हैं—"यह कैसे आश्चर्यकी बात है कि एक ही शक्तिके सामने जीवनकी सभी चीजें सिर झुकाती हैं! केवल दृढ़ता ही एक ऐसी शक्ति है, जो सब कठिनाईयोंको सुगम बना देती है।"

सुप्रसिद्ध जनरल ग्रांटके विषयमें अब्राहम लिंकन लिखते हैं-"सबसे अधिक अनुकरणीय बात यह है कि जनरल बहुत दृढ़ इच्छा रखनेवाला पुरुष है। उसकी वह इच्छा सहजमें बदली या भड़काई नहीं जा सकती है। जिस तरह शिकारी कुत्ता किसी जानवरको पकड़ लेता है तो फिर उसका छुड़ाना कठिन हो जाता है—जनरलके कामोंमें भी ऐसी ही दृढ़ता दिखाई देती है।"

कदाचित् तुम कहोगे कि उपरिलिखित मतोंमें दृढ़ताकी अपेक्षा इच्छापर ही अधिक जोर दिया गया है। वास्तवमें उपरिलिखित मत दृढ़ इच्छाके लिए ही लिखे गये हैं। क्योंकि दृढ़ताके बिना इच्छा कभी सफल नहीं होती है। बढ़ई जिस रुन्देसे लकड़ीको साफ करता है उसे तुमने देखा होगा। उसमें लोहेका जो भाग लकड़ी साफ करनेका काम करता है, वह लकड़ीके चौखटेमें जड़ा रहता है। यदि उसे लकड़ीके चौखटेमें न रक्खें तो वह काम नहीं दे सकता। तुम्हारी इच्छा रुन्देके उस लोहेके समान है जो अपने सफलताके मार्गसे भय, अकर्मण्यता, निर्बलता, निराशा और आलस्य आदि काँटोंको साफ करती है। यदि वह इच्छाकी फलक दृढ़ताके चौखटेसे न जकड़ा जाय तो वह गिर जाय और साफ करनेका काम अधूरा ही रह जाय।

यदि तुम दृढ़ता नहीं रख सकते तो किसी एक कामको मजबूतीसे पकड़नेकी आदत डालो। ऐसा करनेसे तुम्हारे मनमें दृढ़ताका

आदत पड़ जायगी और तुम्हारे मस्तिष्कके बारीक अणु विकसित
। उठेंगे। अन्तमें दृढ़ता तुम्हारी रग रगमें समा जायगी। तुम
पने प्रतिदिनके कर्त्तव्य और कामकाजोंमें मन लगाओ और फिर
नेमें उनपर विचार करो। ऐसा करनेसे तुममें छोटे छोटे विघ्नोंको
र करनेकी ताकत आ जावेगी। ये सब अभ्यास और मशावरेका
ते है। यदि तुम प्रत्येक कार्य्यको दृढ़ताके साथ करोगे तो अन्तमें
हें इन कामोंमें सफलता मिले बिना न रहेगी, क्योंकि सफलता
दृढ़ताके पीछे पीछे चलती है।

चौदहवाँ प्रकरण ।

अभ्यास ।

" अभ्यासमे प्रत्येक काम सुलभ हो जाता है ।"

—तालेब ।

इस बातको सभी स्वीकार करते हैं कि अभ्यास
आदत एक शक्ति है । परंतु मुझे खेदके सा
लिखना पड़ता है कि लोग उसकी केवल एक
बाजू देखते हैं । यह कथन अक्षरशः सत्य है कि
"मनुष्य अपनी आदतोंका गुलाम है ।" वह अप
भली या बुरी आदतोंके अनुसार ही सुख या दुःख पाता है । प
इसके सिवा उसकी एक दूसरी बाजू भी है, जिसे हम इस प्रकरण
अपने पाठकोंको दिखाना उचित समझते हैं ।

मोड़ दो, फिर चाहे जितना प्रयत्न करो यह मोड़ सहज ही रहेगी। हम अपने हाथ या पाँवके जिन मोजोंको नित्य पहनते है वे हमारे हाथ या पैरोंकी गठनके अनुसार घर कर लेते र चिन्दी चिन्दी होकर फट जानेकी अवस्था तक वे वैसे ही बने है। इसी प्रकार जमीनपर पानी बहते बहते कालान्तर में बड़ी गहरी नदी नाले बन जाते हैं। यह सब अभ्यास ही का है।

उपरिलिखित प्रमाणोंसे हम आदत या स्वभावको पहिचान सकते यदि हम चाहें तो पुरानी बुरी आदतों—खराब अभ्यासोंको मिटा· अच्छी नई आदतें डाल सकते हैं। जिस प्रकार नये मार्गके बन पर पुराना मार्ग आप-ही-आप बंद हो जाता है, उसी प्रकार अच्छी आदतोंके पड़ जानेपर पुरानी बुरी आदतें आप-ही-आप जाती हैं। प्रत्येक व्यक्तिको अपनी आदतोंपर दृष्टि रखना हिए और अपनेमें जो जो बुरी आदतें दिखलाई दे, उनको दूर का प्रयत्न करना चाहिए। अभ्यास मानसिक-मार्ग है। इस को बनानेके लिए कंकड़—पत्थर और पानीकी आवश्यकता नहीं है—केवल एक अभ्यासहीकी आवश्यकता है। मानसिक-मार्ग नेके कुछ नियम नीचे लिखे जाते हैं—

१ तुम जिस उत्तम आदत या अभ्यासको बढ़ाना चाहते हो के विषयमें पहले खूब विचार करो, अपने स्वभावकी अनुरू· को पहिचानो और फिर उसे दृढ़ताके साथ पकड़ लो। स्मरण ना चाहिए कि प्रारंभमें मानसिक-मार्ग बनानेका काम बहुत कठिन ता है, इसलिए प्रारंभमें तुम जितनी दृढ़ता दिखलाओगे, वह उतना ही पक्का और अच्छा बनेगा।

४ तुम अपनी पुरानी आदतों—पुराने मार्गपरसे जानेके लालचको रोको, तुम जितनेबार उस लालचको रोकनेकी चेष्टा करोगे, तुममें उतनी ही दृढ़ता आवेगी। किसी भी कामके प्रारंभमें बहुत कठिनाई मालूम पड़ती है, परंतु ज्यों ही हम उसको करने लगते हैं त्योही सब कठिनाइयाँ दूर भाग जाती हैं। इसलिए हमको प्रत्येक कामके प्रारंभमें खूब दृढ़ताके साथ काम करना चाहिए।

५ पहले इस बातका निश्चय कर लो कि तुम्हारे जानेका मार्ग सीधा, समतल और कंटकहीन है या नहीं। उसके परिणामपर भी विचार करो। उस मार्गका अंतिम लक्ष्य उत्तम होना चाहिए। इतना शोध करके सब चिन्ताओंको एक ओर रखकर उसपर चलना प्रारंभ कर दो—शक या संदेहके लिए हृदयमें स्थान भी मत रक्खो।

६ तुम्हारा मुकाम प्रामाणिक पैसाकी सफलता है। उसके समीप तक पहुँचनेके लिए सीधा और दृढ़ मार्ग तैयार करना चाहिए। यह मार्ग अभ्याससे बनाया जा सकता है।
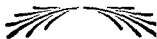
यह अच्छी वस्तु चाहे धन-दौलत, मान-सम्भ्रम, पदाधिकार, परोप-कार आदि कुछ भी हो, परंतु मनुष्य उसकी चाहसे विमुख नहीं रहता है। उत्तम वस्तुओंकी चाह करना मानव मनका एक स्वाभाविक गुण है। इस प्रसंगपर मुझे फ्रेंच इतिहासमें लिखी हुई एक बातका स्मरण हो आया है, उसे मैं इस स्थलपर लिख देना उचित समझता हूँ।

फ्राँसके सुप्रसिद्ध बादशाह नैपोलियनको चिट्ठी देनेके लिए एक सवार घोड़ा मारता हुआ शीघ्रतासे जा रहा था। वह बहुत दूरीसे आरहा था, इस कारण घोड़ा दौड़ते दौड़ते अत्यन्त थक गया था। सवार ज्यों ही नैपोलियनके पास पहुँचा और उसे चिट्ठी देनेके लिए घोड़ेपरसे कूदा, घोड़ा त्यों ही जमीनपर गिरकर मर गया। नैपोलियनने पत्रोत्तर लिखकर सवारको दिया और उससे कहा—"तुम्हारा घोड़ा मर गया है, इसलिए तुम मेरे इस खास घोड़ेपर बैठकर जाओ और सेनापतिको शीघ्र ही हमारा पत्र दो।" सवार घबड़ा गया, उसने नम्रतापूर्वक कहा—"प्रभो! हम जैसे तुच्छ सेवकोको आपके घोड़ेपर बैठना उचित नहीं है।" इतना कहकर उसने सिर झुका लिया। नैपोलियनने उत्तर दिया—"दुनियामें ऐसी एक भी वस्तु नहीं है जो फ्राँसके एक छोटेसे छोटे सिपाहीको न दी जा सके।" अपने बादशाहके मुँहसे ऐसे उदारतापूर्ण शब्दोको सुनकर सवार आनंदसे परिपूर्ण हो गया, वह शीघ ही घोड़ेपर बैठकर रवाना होगया। जब नैपोलियनके शिकस्त खाये हुए सैनिकोंने उस सवारके द्वारा ऐसे महत्त्वाकांक्षापूर्ण शब्द सुने तब उनका मन उत्साहसे भर गया और वे सम्राट्के उन शब्दोंको जोरसे दुहराने लगे। वे अपने महान् प्रभुके उपयुक्त सैनिक थे। अपने सम्राट्के ऐसे

जो लोग उत्तम चीज़ोंकी प्राप्तिके लिए प्रयत्न करते हैं, उनकी महायता स्वयं प्रकृति करती है। तुम क्या यह समझते हो कि प्रकृति हर तरहसे दृढ़, स्वाभिमानी और आत्मविश्वासी पुरुषोंको उत्पन्न कर-नेकी इच्छा नहीं रखती है? प्रकृति बड़ी उदार है। जो उसकी ओर हाथ फैलाता है वह उसे ही अपनी शक्ति दे डालती है। भीरु, अकर्मण्य और साहसहीन व्यक्ति प्रकृतिके इस दानमें सर्वथा वंचित रहते हैं। जो लोग 'मन भावे और माथा हिलावे' की कहावतको चरितार्थ करते हैं, उनको प्रकृतिसे कभी उत्तमन नहीं मिलता है। जो लोग झूठमूठ हाथ उठाकर कहते हैं कि 'मुझे अमुक वस्तुकी जरूरत नहीं है—मैं उसे नहीं चाहता हूँ' वे अपने आसपास वैसा ही हानिकारक असर फैलाते हैं और यदि बारीकीके साथ उनकी ओर देखा जाय तो मालूम होता है कि वे नम्र होनेके बदले मगरूर और निरीह होनेके बदले लालची बन जाते हैं। वे जो कुछ कहते हैं वह उनके केवल मौखिक शब्द हैं, बाकी काम उनके उससे बिलकुल उल्टे होते हैं। अतएव ऐसी शिक्षासे सदैव दूर रहना और संसारकी उत्तम वस्तुओंपर अपना अधिकार प्रकट करना सर्वथा उचित और आवश्यक है। तुम विश्वास रक्खो कि दुनियाकी प्रत्येक उत्तम वस्तु प्रत्येक स्त्री-पुरुषके लिए उपयुक्त है, प्रत्येक मनुष्य उनका अधिकारी और पात्र है।

पाठको! जिस महान् शक्तिने हम सबको उत्पन्न किया है, उसीने हमारे चारित्रिक, मानसिक और शारीरिक जीवनको उच्चा-तिउच्च बनानेके लिए समस्त आवश्यक उपकरणों—सामग्रियोंको उत्पन्न कर रक्खा है, विलम्ब केवल उसे व्यवहारमें लाने भरका है। तुम्हें जिस वस्तुकी चाह है—तुम जिसके इच्छुक हो वह वस्तु तुम्हें

सोलहवाँ प्रकरण।

पैसेको काममें लगाना।

गत १५ प्रकरणोंमें प्रामाणिकपनसे पैसा पैदा करनेके उचित नियमों और तत्संबंधी अनेक साधनों या युक्तियोंका वर्णन किया गया है। अभी तक जो कुछ कहा गया है। वह ज्ञातव्य और जरूरी था, कारण कि किसी कामको करनेके पहले उसका जानना और किसी वस्तुको व्यवहारमें लानेके पहले उसकी उपस्थिति होना अत्यावश्यक है। परन्तु अभी तक हमने पैसेको काममें लगानेके विषयमें कुछ नहीं लिखा है। इस अंतिम प्रकरणमें इसी विषयपर कुछ बातें लिखी जाती हैं।

इस स्थलपर यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है, कि मान लो कोई व्यक्ति किसी पुस्तकमें वर्णन किये हुए समस्त गुणों और शक्तियोंसे परिपूर्ण है, परन्तु वह किसी जंगल या अरबस्तानके ऊजड़ प्रान्तमें बसता है, तो क्या वह धनोपार्जन करनेमें समर्थ हो

पूँजीको किसी व्यापार-धंदेमें लगाना चाहिए। पहले पहले बड़ी पूँजी न हो तो कुछ परवा नहीं, थोड़ी पूंजीसे भी काम शुरू किया जा सकता है।

उसने दूसरे ही दिनसे नौकरी छोड़ दी और एक जगह जहाँपर रेलकी सड़क बननेका काम चल रहा था, घोड़ा हाँकनेका काम प्रारंभ कर दिया। छह महीनेमें उसके पास घोड़ोंकी एक जोड़ी खरीदनेके योग्य पैसा जमा हो गया। अब उसने दो घोड़े खरीद लिए और उन्हें स्वतः चलानेका काम प्रारंभ कर दिया। इस तरह उसका स्वतंत्र काम चलने लगा। थोड़े ही दिनोंके बाद उसने उस जोड़ीके सिवा एक और जोड़ी खरीद ली और उसको चलानेके लिए एक आदमी नौकर रख लिया। इस तरह उसका काम दिनपर दिन बढ़ता गया। अब उसके पास पचासों जोड़ी घोड़े हो गये और उनके चलानेके लिए उतने ही नौकर रक्खे गये। अब वह स्वतः घोड़ा चलानेका काम छोड़कर केवल निगरानी या देखरेख रखनेका काम करने लगे। थोड़े ही दिनोंके बाद वह फिर धनवान् हो गया।

अन्य पुरुषोंके समान सक्त-धनी पुरुषके मस्तिष्कमें भी वह शक्ति बीजरूपसे उपस्थित थी। उसने उसे विकसित करनेका प्रयत्न किया और अपने मस्तिष्कमें छिपे हुए महान् सत्यको प्रकट कर दिया। वह महान् सत्य यह था कि "केवल हाथकी मिहनत और दूसरेकी नौकरी करनेसे कभी कोई धनवान् नहीं हो सकता है। धनवान् बननेका एकमात्र उपाय पैसेको काममें—व्यापार-धंदेमें लगाना है।"

जब इस प्रकार १००) इकट्ठे हो जायँ तब उसे किसी विश्वस्त कम्पनीमें जमा कर दो। यदि कोई युवक मुझसे पूछ बैठे कि मैं उन रुपयोंको किसी स्वतंत्र व्यापार-धंदेमें क्यों न लगाऊँ ? तो इसका उत्तर मैं यही दूँगा कि यह काम तुम्हारे साहस, श्रम, उत्साह, धैर्य और दृढ़तापर निर्भर है। यदि तुममें इतने गुण हों, तो तुम खुशीसे साथ व्यापार-धंदा करो, तुम उसमें सफलता प्राप्त करोगे। और यदि तुममें उक्त गुण न हों, तो तुम्हारा वर्त्तमान धंदा ही—जिससे बचतसे १००) जोड़े हैं—अच्छा है। तुम उसे ही करते जाओ और उन रुपयोंको किसी कंपनीमें लगा दो, जिससे तुम्हारा वह रुपया सुरक्षित रहे और उसपर तुम्हें व्याज और मुनाफा मिलता रहे।

परंतु इतना ध्यान रखना चाहिए कि तुम जिस कंपनीमें रुपया लगाओ वह विश्वसनीय हो। तुम अपने मित्रों या एजेंटोंकी लम्बी चौड़ी बातोंपर सहसा विश्वास मत कर बैठो। पूंजीको—बचतको खूब सोच-समझकर काममें लगाओ। जिस कंपनीके कार्यकर्त्ता उत्साही अनुभवी, परिश्रमी और चरित्रवान् हों उस कम्पनीमें लगाया हुआ रुपया सुरक्षित समझना चाहिए। बड़े बड़े विज्ञापनों, हेंडबिलों और एजेंटोंकी रंगीली इबारतोंसे तुमको सदैव सावधान रहना चाहिए। स्मरण रखना चाहिए कि जो उद्योगी और सच्चे काम करनेवाले होते हैं, उन्हें अधिक आडम्बर और बाहरी रँग ढँग बनानेकी आवश्यकता नहीं पड़ती है—उन्हें ऐसे कामोंके लिए अवकाश ही नहीं मिलता। जो लुटेरे और ठग होते है वे ही विविध उपायों और प्रलोभनोंसे ग्राहकोंके फँसानेकी चेष्टा करते हैं। तुमने देखा होगा कि रेलका एँजिन जो मालगाड़ीको खींचता है, वह इतनी आवाज नहीं करता है जितना कि खाली एँजिन करता है। मेसर्स ताताके

जब इस प्रकार १००) इकट्ठे हो जायँ तब उसे किसी विश्वस्त कम्पनीमें जमा कर दो। यदि कोई युवक मुझसे पूछ बैठे कि मैं इन रुपयोंको किसी स्वतंत्र व्यापार-धंदेमें क्यों न लगाऊँ? तो इसका उत्तर मैं यही दूँगा कि यह काम तुम्हारे साहस, श्रम, उत्साह, धैर्य और दृढ़तापर निर्भर है। यदि तुममें इतने गुण हों, तो तुम खुशीके साथ व्यापार–धंदा करो, तुम उसमें सफलता प्राप्त करोगे। और यदि तुममें उक्त गुण न हों, तो तुम्हारा वर्त्तमान धंदा ही–जिसकी बचतसे १००)जोड़े हैं–अच्छा है। तुम उसे ही करते जाओ और उन रुपयोंको किसी कंपनीमें लगा दो, जिससे तुम्हारा वह रुपया सुरक्षित रहे और उसपर तुम्हें व्याज और मुनाफा मिलता रहे।

परतु इतना ध्यान रखना चाहिए कि तुम जिस कंपनीमें रुपया लगाओ वह विश्वसनीय हो। तुम अपने मित्रो या एजेंटोंकी लम्बी चौड़ी बातोंपर सहसा विश्वास मत कर बैठो। पूंजीको–बचतको खूब सोच–समझकर काममें लगाओ। जिस कंपनीके कार्यकर्त्ता उत्साही अनुभवी, परिश्रमी और चरित्रवान् हों उस कम्पनीमें लगाया हुआ रुपया सुरक्षित समझना चाहिए। बड़े बड़े विज्ञापनों, हैंडबिलों और एजेंटोंकी रंगीली इबारतोंसे तुमको सदैव सावधान रहना चाहिए। स्मरण रखना चाहिए कि जो उद्योगी और सच्चे काम करनेवाले होते हैं, उन्हें अधिक आडम्बर और बाहरी रँग ढँग बनानेकी आवश्यकता नहीं पड़ती है–उन्हें ऐसे कामोंके लिए अवकाश ही नहीं मिलता। जो लुटेरे और ठग होते हैं वे ही विविध उपायों और प्रलोभनोंसे ग्राहकोंके फँसानेकी चेष्टा करते हैं। तुमने देखा होगा कि रेलका एँजिन जो मालगाड़ीको खींचता है, वह इतनी आवाज नहीं करता है जितना कि खाली एँजिन करता है। मेसर्स ताताके

'कार्टामिट्टोंके' आर्यन वर्क्स और नागपुरकी स्वदेशी मिलके शेयरोंके लिए बड़े बड़े विज्ञापन, हेण्डबिल और प्रसिद्धिपत्र व्यवहारमें नहीं लाये जाते हैं, उनके अधिकारीगण अपनी कार्यकुशलता और प्रामाणिकपनसे उसे प्रसिद्ध करते हैं।

सरकारी बेंकोंमें रुपयोंके मारे जानेका डर नहीं रहता है, परंतु उनमें ब्याज बहुत कम मिलता है। इस कारण अधिकांश लोग उनसे लेनदेन नहीं करते हैं। डाकखानेके सेविंगबेंकों और बड़े बड़े शहरोंके म्यूनीसिपलबेंकोंमें रुपया सुरक्षित रहता है और लेने देनेमें भी अधिक सुभीता रहता है। रेल, ट्राम्बे और समाचारपत्रोंके शेयर खरीदनेके पहले उनके डायरेक्टरोंपर पूरा पूरा भरोसा कर लेना चाहिए।

मिल और फैक्टरियोंमें पूँजी लगानेके पहले देशकी व्यापारिक दशा, परदेशी मालकी कटती, तत्संबंधी राजकीय नियम, प्रतिस्पर्धा आदि बातोंपर खूब विचार कर लेना चाहिए। खानि आदिका काम भी बहुत फायदेका होता है। पर उसमें सावधानीका विशेष आवश्यकता है। खानि किस पदार्थकी है? उसकी जरूरत कैसी है? अपने देशके साथ किसी अन्य देशसे लड़ाई तो नहीं चल रही है? इत्यादि बातोंपरसे उसका निर्णय करना चाहिए। बहुधा युद्धादिके समय ऐसे कामोंको सहसा धक्का बैठता है—कई व्यापार इकदम चौपट हो जाते हैं। पूँजी लगाते समय इन सब बातोंपर गंभीरतापूर्वक विचार कर लेना चाहिए।

एकदम सारी पूँजी किसी एक ही कंपनीमें लगा देनेसे कभी कभी लाभके बदले गुरुतर हानि उठानी पड़ती है। अतएव कई कम्पनियोंमें थोड़ी थोड़ी पूँजी लगाना चाहिए। ऐसा करनेसे हानिकी संभावना नहीं रहती है।

इन सब बातोंकी अपेक्षा सबसे अधिक जरूरी और ध्यान देने योग्य बात यह है कि तुम जिसके साथ व्यवहार करना चाहते हो, पहले उसका पूरा पूरा भरोसा कर लो। ऐसे अनेक छोटे, पर आडम्बर रहित और सादी रीतिपर चलाने योग्य धंदे हैं कि जो छोटी पूंजीवालोंके लिए आशीर्वाद-स्वरूप हैं। परंतु देखा जाता है कि बहुधा अनेक लोग बड़े बड़े रँगीले विज्ञापनोंपर मोहित होकर अपनी पूँजी लगा बैठते हैं और पीछे जन्मभर पछताते हैं।

मान लो कि जिस कंपनीमें तुमने पूँजी लगाई है, वह बैठ गई और तुम्हारा सब रुपया पानीमें गया तो तुम क्या करोगे ? गई बीती बातपर शोक करना व्यर्थ है। एक अँगरेज अपनी गँवारी भाषामें कहता है "अपनी सफलता भूल न करनेपर नहीं, परंतु उस भूलको फिर न होने देनेपर निर्भर है।"

—एक मधुर तानके समान जीवनके प्रवाहमें आनंदसे रहना सहज काम है, परंतु वास्तवमें योग्य पुरुष वही है जो अपने समस्त कामोंके निष्फल जानेपर भी हँसता रहता है।

—एला वीलर विलकोक्स।

यदि तुम पूँजी लगाना चाहते हो तो तुमको कंपनीकी कई बारीकियोंको जाननेका प्रयत्न करना चाहिए। यदि वे बारीकियाँ तुम्हारी दृष्टिमें न आती हों—जो उनके एजेंट या वैसे ही किसी अन्य पुरुषसे पूछना चाहिए। हम इसी उद्देश्यसे पूँजी लगानेवालोंके पूछने योग्य प्रश्न लिखते हैं।

एक पूँजी लगानेवालेके पूछने योग्य प्रश्न।

१ कंपनीका साहस—(१) क्या इस कंपनीका साहस दृढ़ है ? (२) ऐसा साहस करनेवाली अन्य कम्पनियोंने लाभ

६ बोर्डके सभासद–(१) बोर्डके सभासद कितने हैं ? (२) उनके नाम क्या है ? (३) उनकी योग्यता और अनुभव कैसा है ? (४) वास्तवमें काम करनेवाले सज्जन कौन कौन हैं ? (५) सभामें बहुधा कितने सभासद आते हैं ? (६) हमेशा आनेवाले सभासद कौन कौन हैं ? (७) कामकाजसे विशेष संबंध न रखने-वाले सभासद कौन कौन और कितने हैं ? (८) अधिक शेयरोंके मालिक कितने हैं ? (९) कंपनीपर उनका कैसा प्रभाव है ?

७ मैनेजर या संचालक—(१) कंपनीका मैनेजर या सचालक कौन है ? (२) वह पहले क्या काम करता था ? (३) उसकी योग्यता कैसी है ? (४) क्या वह सावधानीसे काम करता है ? (५) उसे वेतन क्या मिलता है ? (६) उसका आचरण कैसा है ? (७) क्या वह इस कंपनीसे प्रेम रखता है ?

८ कामकाजका ढँग—(१) कामकाजका ढँग कैसा है (२) किस पद्धति या सिद्धान्तपर उसका काम चलाया जाता है (३) उस सिद्धान्तका कारण क्या है ?

९ फुटकर—(१) बोंड घटा है ? (२) दूसरेके साथ तुलन करनेमें क्या अन्तर है ? (३) पृथक् पृथक् शेयरोंमें कितना दा है ? (४) शेयर बेचते समय क्या उनकी कीमत पैदा हो जायगी (५) इस कंपनीका आगेका साहस कैसा है ? (६) इसका संचालक पहले कौन था ? (७) कोई ऐसा नियम तो नहीं है जो पीछेसे बंधन-स्वरूप हो जाय ?

विद्वानोंके वहुमूल्य वचन।

(१)

"To catch Dame Fortunes golden smile
Assiduous wait upon her,
And gather gear by every wile
Thats justified by Honour,
Not For to hide it in hedge
Not for a train attendant
But for the glorious privilege
Of being Independent"

Robert Burns

"पैसेको प्रामाणिकपन अर्थात् उत्तम उपायोंसे ही पैदा करो, परंतु यह सदैव ध्यानमें रक्खो कि वह पैसा जमीनमें गाड़नेके लिए अथवा व्यर्थ खर्च करनेके लिए नहीं है-वह स्वतंत्रता और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करनेके लिए है।"

—राबर्ट बर्न्स।

(२)

"No one has a right to be contented; it is one absolutely Fatal State"

Oppenheim,

"किसीको भी संतोषी होनेका हक नहीं है; यह एक प्राणघातक हालत है।"

—ओपेनहीम।

(३)

"There is no such thing as chance; and what to us seems merest accident springs from the deeper source of destiny."

Schiller

"सृष्टिमें अकस्मात्, दवयोग आदि कोई चीज नहीं है; इससे जो हम अकस्मात्, दैवयोग या भाग्य दिखाई देता है, वह सब सृष्टिके नियमोंपर अवलम्बित रहता है।" —सचिलेर।

(४)

"*O ! it is excellent*
To have a giants strength; but it is tyrannous
To use it like a giant"

Shakespeare.

"अहा ! एक राक्षसके समान बल रखना उत्तम है; परंतु उसे राक्षसके समान व्यवहारमें लाना बड़ा जुल्म है।" —शेक्सपियर।

(५)

"धन वह वस्तु है कि जिसके रहनेसे मुख-मण्डलपर लाली बनी रहती है और जिसके चले जानेपर मुँहकी लाली भी चली जाती है, मुँह पड़ जाता है।"

(६)

"जो काम हम स्वयं कर सकते हैं उसके लिए दूसरोंका सहारा लेना उचित नहीं है।"

(७)

"अप्राप्त और अनिश्चित आमदनीके भरोसे ऋण लेना मूर्खता है।"

(८)

"चाहे जो मिले—चाहे जितना मिले, मुझे इसकी चिन्ता नहीं है। केवल यह चाहता हूँ कि मुझे खर्चेसे कुछ अधिक मिल जाया करे।"

(९)

"जो तुम दुनियाके आनंदोंमें सुखी होना चाहते हो, तो तुम्हें चाहिए तुम लोगोंके साथ ऐसी कृपा करो, जैसी परमात्माने तुम्हारे साथकी है।"
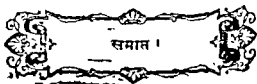
हिन्दी-साहित्य-प्रचारक ग्रंथमाला।

उद्देश्य—इस मालाका जन्म मातृभाषा हिन्दीके उत्तमोत्तम ग्रंथोंका हिन्दी भाषा भाषियोंमें प्रचार करनेके लिए हुआ है।

स्थायीग्राहक—(१) प्रवेशफीस दाखिल करनेवाले मालाके स्थायीग्राहक समझे जावेंगे। और उन्हें कार्यालयसे प्रकाशित पुस्तकें पौनी कीमतमें भेजी जायेंगी।

पोस्टेज और मनिआर्डर कमीशन खरीददारके जिम्मे रहेगा। मालाके निम्न ग्रंथ तैयार हुए हैं—

गुरु शिष्य संवाद—(ग्रंथमालाका प्रथम पुष्प) यह पुस्तक भारतवर्षके उद्धारक स्वामी विवेकानंदजीके मुखारविन्दसे निकले उपदेशोंका स्रोत है। समय समयपर उनके शिष्योंने जो उनसे प्रश्न किये थे, वे ही प्रश्नोत्तररूपसे इस पुस्तकमें लिखे गये हैं। इसमें देशभक्ति सामाजिक तत्त्व धार्मिक और ज्ञान विषयक अनेक गूढ़ प्रश्नोंको सरल भाषामें हल किया है। पुस्तककी लेखन-शैली ऐसी विचित्र है कि उसका परिणाम पाठकोंके मनपर शीघ्र पड़े बिना नहीं रहता है। स्वामीजीके उपदेशोंकी अधिक प्रशंसा करना, मानो सूर्यको दीपक दिखाना है। मूल्य ।)

आर्थिक-सफलता—(ग्रंथमालाका द्वितीय पुष्प) यह पुस्तक एडवर्ड ई० विलमकी 'फाइनानशियल सक्सेस' के आधारसे लिखी गई है। इसमें प्रामाणिकपनसे पैसा पैदा करनेकी युक्तियां लिखी गई हैं। इसमें बतलाये हुये मानसिक विचारोंद्वारा बिल्कुल गरीब और निर्धन मनुष्य भी धनवान् बन सकता है। मूल्य ।≈)

कर्मक्षेत्र—(ग्रंथमालाका तृतीय पुष्प) यह पुस्तक श्रीशशिभूषणसेन रचित बंगला कर्मक्षेत्रका अनुवाद है। बंग-साहित्यमें इसका खूब आदर हुआ है। कर्महीन भारतवासियोंको कर्तव्य-मार्गपर आरूढ़ करनेके लिये यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। कुशल लेखकने इसमें धर्म, साहित्य, व्यापार तथा राजनैतिक क्षेत्रोंमें साधना करनेवाले स्वदेशी कर्मवीर पुरुषोंके संकल्प, उनकी साधनाकी दृढ़ता, संकटोंके समय पीछा पैर न देनेकी नीति और अंतमें उनकी सिद्धिका वर्णन ऐसी उत्तमताके साथ किया है कि उसका प्रभाव पाठकोंपर पड़े बिना नहीं रहता, इस पुस्तकका घर घर प्रचार होनेकी आवश्यकता है। मूल्य सादी जिल्दका लगभग १) और सजिल्दका १।)

सुप्रसिद्ध अंग्रेजी पत्र 'बंगाली' कहता है—"कर्मक्षेत्र, कर्मपद्धतिका उपदेश देता है। वह एक बड़ी शिक्षा देता है, और वह यह है कि मनुष्यका जीवन ओजस्वी है, उसका उपयोग कर्म करने ही में होना चाहिए। देशमें काम करनेवाले युवकोंको पैदा करनेके लिये जैसे साहित्यकी आवश्यकता है, यह उसी जातिका साहित्य है। प्रत्येक युवकके हाथमें यह पुस्तक दे देनेमें हमें जरा भी आगा पीछा नहीं करना चाहिए। इस तरहकी उत्तेजक प्रभाव डालनेवाली पुस्तकोंकी विशेष प्रशंसा करना अशक्य है।"

गृहिणीभूषण—स्त्रियोंकी वास्तविक शोभा कीमती कपड़ों और ... नहीं होती। किन्तु उत्तम गुणोंके सीखनेसे होती है। उस पुस्तकमें ... योग्य उत्तमोत्तम २४ गुणोंका वर्णन बड़ी खूबीके साथ सरल भाषामें ... है। पति प्रेम, सतीत्व रक्षा, स्वजनवात्सल्य, चारित्रगठन, गृह-प्रबंध, कर्त्तव्य, गर्भवतीका कर्त्तव्य, सन्तान पालन आदि कई बातोंका ... करके यह भूषण तैयार किया गया है। इस पुस्तकके उपदेशसे आपका स्वर्गधाम बन जायगा। प्रथमावृत्ति हाथोंहाथ बिक गई दूसरी बार छपी है। ...

अन्य उत्तमोत्तम पुस्तकें।

आदर्श चरितावली—परोपकारी महात्माओंके पवित्र जीवनचरित मूल्य
मेरे गुरु देव—जगत्प्रसिद्ध स्वामी विवेकानंदके गुरु स्वामी ... सचित्र जीवनचरित मू० ।)
भारतीय नीतिकथा—महाभारतकी शिक्षाप्रद कथायें मूल्य ॥।)
जननी-जीवन—माताके कर्त्तव्योंका वर्णन ॥~)
शारदा—मौपासाँ अपूर्व उपन्यास ।=)
अन्योक्ति कुसुमाञ्जलि—कविता... ~)
मनोरंजक कहानियाँ—इसमें छोटी छोटी कहानियाँ हैं। मूल्य ≈)

मिलनेका पता—

मैनेजर हिन्दी-साहित्य-प्रचारक कार्यालय,
नरसिंहपुर, (म० प्र०)

श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, ४०२ ठाकुरद्वार, मुंबई.